नोएडा स्वर

11 वां संस्करण
वर्ष 2025

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा

(सचिवालय : भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा)

ए-13, सेक्टर-1, नोएडा-201301

नोएडा स्वर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा

(सचिवालय : भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा)

अंक : 11 **वर्ष : 2025**

संरक्षक : श्री सुनील पालीवाल , आई. ए. एस.
अध्यक्ष
भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण एवं
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा

मार्गदर्शक : कर्नल हर्षवर्धन
सचिव
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा

सम्पादन एवं समन्वय : डॉ. प्रज्ञा कांडपाल,
हिंदी अधिकारी, भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण
सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा

संपादक मंडल : डॉ. अशोक यादव, कार्यालय प्रमुख
भारतीय मृदा एवं भू उपयोग सर्वेक्षण, सेक्टर-1, नोएडा
श्री चंद्र प्रकाश, हिंदी अधिकारी
फुटवेयर डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट सेक्टर-62, नोएडा

"पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के निजी विचार हैं। रचना की मौलिकता और अन्य किसी विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।"

सम्पर्क सूत्र :- हिंदी अधिकारी व सदस्य सचिव, न.रा.का.स नोएडा.
भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्रधिकरण, ए-13, सेक्टर -1, नोएडा, उत्तर प्रदेश – 201301
दूरभाष : 0120-2521724
वैबसाइट : www.iwai.nic.in

क्रं सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	संरक्षक की कलम से	3
2.	मार्गदर्शक का संदेश	4
3.	संपादकीय	5
4.	ऑपरेशन सिंदूर : भारत की नई सैन्य रणनीति	6
5.	भाषाएं अनेक, भावना एक	9
6.	फिर वही बातचीत	11
7.	धुआँ सा गुजरता है	12
8.	अनुसंधान के क्षेत्र में हिंदी भाषा का बढ़ता महत्व	13
9.	प्रभु और सृष्टि	16
10.	उपेक्षित कहानी	17
11.	हिंदी भाषा की बोलियाँ एवं राजभाषा	18
12.	मुझे नहीं खोना	20
13.	आसमान ही सीमा है	22
14.	वापसी की राह	25
15.	तेरा शहर	26
16.	डिज़ाइन पाठ्यक्रमों के लिए सर्वोत्तम शिक्षण पद्धतियाँ	27
17.	सच्ची प्रेम कहानी	31
18.	सोशल मीडिया पर फेक न्यूज़: समस्या और समाधान	33
19.	उड़ान	39
20.	जानती हूँ भीग जाऊँगी	41
21.	कभी कभी मुस्कुरा लिया करता हूँ	42
22.	भारतीय शिक्षा में कला का महत्व	43
23.	इंसान फिर बने इंसान	47
24.	धुआँ रहित तंबाकू सच्ची प्रेम कहानी	48
25.	याद आता है मेरा घर	51
26.	देख तमाशा लकड़ी का	52
27.	हमारा फाइनेंस परिवार	53
28.	प्रतियोगिता की राह	54
29.	नारी सशक्तिकरण	55

संरक्षक की कलम से

श्री सुनील पालीवाल, आई. ए .एस .

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों के तहत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) नोएडा की वार्षिक गृह पत्रिका **नोएडा स्वर** का नवीनतम अंक प्रकाशित किया जा रहा है । जैसा कि आप सभी को अवगत है, नराकास के गठन का प्रमुख उद्देश्य सदस्य कार्यालयों में राजभाषा नीति का उचित कार्यान्वयन तथा राजभाषा हिंदी का प्रचार- प्रसार सुनिश्चित करना है । पत्रिका मे माध्यम से सदस्य कार्यालयों के कर्मियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है, साथ ही हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा भी मिलती है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम में राजभाषा में सरकारी काम-काज करने के लिए लक्ष्य निर्धारित किया जाता है और सभी कार्यालयों से इस लक्ष्य को प्राप्त करने की अपेक्षा की जाती है । सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन के नैतिक दायित्व को ध्यान में रखते हुए सरल और व्यावहारिक हिन्दी के प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहने की आवश्यकता है ।

संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ सदस्य कार्यालयों में कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी के उपयोग की भावना भी सुदृढ़ होगी । पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों और संपादक मण्डल को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

सुनील पालीवाल

(सुनील पालीवाल)
अध्यक्ष, न.रा.का.स., नोएडा

मार्गदर्शक का संदेश

(कर्नल हर्षवर्धन)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) नोएडा की वार्षिक ई- पत्रिका **'नोएडा स्वर'** के ग्यारहवें अंक के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं नराकास के विभिन्न सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों की सृजनशीलता को तो प्रकट करती ही हैं साथ ही विभिन्न सामाजिक पहलुओं और विषयों के प्रति उनकी भावनाओं और जागरूकता को भी दर्शाती हैं। मैं सभी रचनाकारों की सराहना करता हूं और आशा करता हूं कि हिंदी के प्रति उनका लगाव कार्यालय के काम काज में भी प्रतिबिंबित होगा। यह पत्रिका हमारा सामूहिक प्रयास है। इसलिए सभी सदस्य कार्यालय इसके लिए बधाई के पात्र हैं।

हिन्दी हमारी राजभाषा है, अतः कार्यालय के काम काज में हिन्दी को अपनाना हम सभी का सांविधिक दायित्व है । हमें अन्य अनुदेशों की तरह राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन भी दृढ़ता एवं तत्परता के साथ करना चाहिए। नराकास का उद्देश्य सदस्य कार्यालयों में भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को बढ़ावा देना है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सभी सदस्य कार्यालय राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ ।

(कर्नल हर्षवर्धन)

सचिव

भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण

नोएडा

संपादकीय

(डॉ. प्रज्ञा कांडपाल)

मुझे इस बात की अपार प्रसन्नता है कि नराकास के सदस्य कार्यालयों के सहयोग से नोएडा स्वर का नवीनतम अंक हमारे सम्मुख है । इस पत्रिका के प्रकाशन में हमारा मार्गदर्शन करने के लिए मैं माननीय अध्यक्ष महोदय तथा उच्चाधिकारियों को हार्दिक धन्यवाद करती हूँ ।

यह पत्रिका सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों को उनकी साहित्यिक प्रतिभा और रचनात्मकता को अभिव्यक्त करने के लिए साझा मंच तो प्रदान करती ही है, साथ ही इसमें प्रकाशित चित्र नराकास द्वारा वर्ष के दौरान आयोजित बैठकों और विभिन्न गतिविधियों की समग्र छवि प्रस्तुत करते हैं ।

नोएडा स्वर सभी सदस्य कार्यालयों के सामूहिक प्रयास और सक्रियता का प्रतिबिम्ब है । आशा करती हूँ विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण जानकारी समेटे हुए पत्रिका का यह नवीनतम अंक ज्ञानवर्धक और रुचिकर होने के साथ-साथ हिंदी में कार्य करने के लिए सकारात्मक ऊर्जा भी प्रदान करेगा । मैं सभी रचनाकारों और सम्पादक मंडल का विशेष आभार व्यक्त करती हूँ । भविष्य में भी आप सभी से इसी तरह के सहयोग की अपेक्षा करती हूँ ।

शुभकामनाएँ ।

प्रज्ञा

(डॉ. प्रज्ञा कांडपाल)

सदस्य सचिव,न.रा.का.स. नोएडा

ऑपरेशन सिंदूर-2025: भारत की नई सैन्य रणनीति

परिचयः

भारत की सुरक्षा और सैन्य योजनाओं में समय–समय पर बदलाव होता है, ताकि देश अपनी रक्षा में मजबूत बना रहे। 2025 में भारतीय सेना ने एक नया और महत्वपूर्ण सैन्य ऑपरेशन **"ऑपरेशन सिंदूर–2025"** शुरू किया। यह ऑपरेशन भारत की आंतरिक सुरक्षा और बाहरी खतरों से निपटने के लिए था। इसके तहत, भारतीय सेना ने अपनी तकनीकी क्षमताओं और विशेष बलों की मदद से आतंकवाद और सीमा पार घुसपैठ को रोकने के लिए कार्रवाई की।

ऑपरेशन सिंदूर–2025 का उद्देश्यः

ऑपरेशन सिंदूर–2025 का मुख्य उद्देश्य भारत की सीमाओं के बाहर आतंकवादियों की गतिविधियों पर कड़ी कार्रवाई करना था। यह ऑपरेशन सीमाओं पर सुरक्षा बढ़ाने, आतंकवादी संगठनों के ठिकानों को निशाना बनाने और भारतीय राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के लिए शुरू किया गया था। इस मिशन में भारतीय सेना ने उन्नत तकनीकी उपकरण, ड्रोन, साइबर युद्ध, और हवाई हमलों का उपयोग किया।

ऑपरेशन सिंदूर–2025 की रणनीतिः

भारतीय वायुसेना और भारतीय नौसेना ने भी इस ऑपरेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सेना ने तकनीकी उपकरणों, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और समग्र सैन्य शक्ति का इस्तेमाल करके इस ऑपरेशन को सफल बनाया।

इसमें विशेष ध्यान सटीक जानकारी जुटाने, हवाई हमलों और ड्रोन के द्वारा क्षेत्र की निगरानी पर था। आतंकवादियों के ठिकानों को निशाना बनाने के लिए हवाई हमले किए गए और सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ तगड़ी कार्रवाई की गई।

ऑपरेशन के दौरान किए गए प्रमुख कार्यः

1. **सीमा सुरक्षा बढ़ाई गईः** इस ऑपरेशन के तहत भारतीय सेना ने अपनी सीमाओं पर सुरक्षा तंत्र को और मजबूत किया।
2. **आतंकी नेटवर्क पर हमलाः** भारतीय सेना ने सीमा पार आतंकवादियों के ठिकानों पर हमला किया और उनके नेटवर्क को नष्ट किया। कई आतंकवादी कमांडर मारे गए और उनके हथियारों के भंडार को नष्ट किया गया।
3. **साइबर युद्धः** इस ऑपरेशन में भारतीय साइबर बलों ने आतंकवादी संगठनों के संचार नेटवर्क को तोड़ा और उनकी गतिविधियों को विफल किया।
4. **जन सुरक्षाः** ऑपरेशन के दौरान नागरिकों की सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा गया। लोगों को सुरक्षित स्थानों पर भेजा गया और राहत कार्यों में सेना ने मदद की।

ऑपरेशन का परिणामः

ऑपरेशन सिंदूर–2025 ने भारत की सैन्य ताकत और रणनीति को एक नया रूप दिया। इससे यह साबित हुआ कि भारतीय सेना किसी भी खतरे से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार है। इस ऑपरेशन की सफलता ने भारत के पड़ोसी देशों और दुनिया को यह संदेश दिया कि भारत अपनी सुरक्षा और राष्ट्रीय हितों की रक्षा में कभी पीछे नहीं हटेगा।

निष्कर्षः

ऑपरेशन सिंदूर–2025 भारतीय सेना की एक बड़ी और प्रभावशाली कार्रवाई थी। इस ऑपरेशन ने भारत की सुरक्षा को सुनिश्चित किया और उसकी वैश्विक स्थिति को भी मजबूत किया। यह ऑपरेशन दर्शाता है कि भारतीय सेना अपनी सीमाओं की रक्षा करने के लिए पूरी तरह सक्षम है और वह किसी भी खतरे से निपटने के लिए तैयार रहती है।

•••

नितिन कुमार वार्ष्णेय
वैज्ञानिक–ई
सी–डैक, नोएडा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) नोएडा की 48वीं बैठक के दौरान प्रतिभा पुरस्कार 2024 प्राप्त करते विद्यार्थी

भाषाएँ अनेक, भावना एक - हिन्दी से भारत का संवाद सशक्त

भारत एक बहुभाषिक राष्ट्र है, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। यद्यपि यह भाषिक विविधता भारतकी पहचान है, परन्तु इस विविधता में एक प्रकार की अद्‌भुत एकता भी है – एक ऐसी आंतरिक संगति, जो इन भाषाओं को अलग–अलग होते हुए भी एक–दूसरे से जोड़ती है। इस परिप्रेक्ष्य में हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच का परस्पर सद्‌भाव एक महत्वपूर्ण विषय है, जो भाषाई सौहार्द, सांस्कृतिक सहभागिता और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बनता है।

भारत की भाषाओं को उनके विकास, व्याकरण और उच्चारण की पद्धति के अनुसार विभिन्न भाषा–परिवारों में बाँटा गया है। भारत की लगभग 75% आबादी द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ इस समूह में आती हैं, जिनमें शामिल हैं :– हिन्दी, बंगाली, मराठी, गुजराती, उर्दू, पंजाबी, असमिया, ओड़िया आदि। इन भाषाओं का विकास संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश से हुआ है। दक्षिण भारत में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाएँ – तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम – द्रविड़ भाषा–परिवार की सदस्य हैं। इनकी व्याकरणिक संरचना अलग है, फिर भी इन पर संस्कृत और हिन्दी का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अन्य भाषा–परिवार जैसे संथाली, मुंडा बोडो, मिजो, मणिपुरी, ये भाषाएँ क्षेत्रीय समुदायों की पहचान हैं, परन्तु हिन्दी और अन्य मुख्य भाषाओं से सम्पर्क के कारण इसमें भी मान्यता बढ़ी है। यह बहुभाषिक संरचना ही हिन्दी और भारतीय भाषाओं के परस्पर सद्‌भाव की नींव रखी है। संस्कृत भारत की प्राचीनतम और अत्यंत वैज्ञानिक भाषा है। हिन्दी ही नहीं, तमिल, मराठी, बंगाली, कन्नड़ और अन्य भाषाओं में भी संस्कृत के शब्द, मुहावरे और शैलियाँ देखने को मिलती हैं। भारतीय भाषाओं की लिपियाँ अलग–अलग हैं – देवनागरी, बंगला, तमिल, गुरमुखी, मलयालम आदि – परन्तु उच्चारण (phonetics), व्याकरण और वाक्य संरचना में अद्‌भुत समानता पाई जाती है। इसी प्रकार भारत में साहित्य और संस्कृति ने भाषाओं के बीच सेतु का कार्य किया है। रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथ हिन्दी, बंगाली, तमिल, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़ आदि में अनूदित होकर स्थानीय भाषाओं में समा गए। भक्ति से जुड़े व्यक्तित्वों ने हिंदी के परस्पर समभाव में कबीर, मीराबाई, नामदेव, तुकाराम, सूरदास आदि संतों की रचनाएँ हिन्दी, मराठी, गुजराती, पंजाबी और अन्य भाषाओं में समान रूप से लोकप्रिय हैं। यह साहित्यिक सहभागिता भाषाओं के बीच सांस्कृतिक संवाद का आधार बनी है।

भारत में अधिकांश लोग एक से अधिक भाषाओं को बोलना, पढ़ना या समझना जानते हैं। दक्षिण भारत में तमिल या कन्नड़ के साथ हिन्दी बोली जाती है। उत्तर भारत में पंजाबी, हिंदी, उर्दू एक साथ बोली जाती हैं। पूर्वोत्तर में बोडो, असमिया और हिन्दी का

संगम देखने को मिलता है। साथ ही हिन्दी से अन्य भारतीय भाषाओं में और उनसे हिन्दी में अनुवाद की समृद्ध परंपरा रही है – साहित्य अकादमी और अन्य संस्थाएं इसमें सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

हिन्दीः एक सेतु भाषा के रूप में

हिन्दी को भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। यह न केवल एक प्रशासनिक भाषा है, बल्कि भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली सेतु भाषा भी बन गई है। हिन्दी फिल्में, समाचार, रेडियो, सोशल मीडिया और शिक्षा के माध्यम से देश के कोने–कोने में पहुँची है। कई राज्यों में, विशेष रूप से गैर–हिन्दी भाषी राज्यों में भी हिन्दी समझी और बोली जाती है। भाषाई समभाव में तकनीक और भाषा के समन्वय की अहम भूमिका रही जिसने भाषाई अंतर को और कम किया है गूगल ट्रांसलेट, AI अनुवाद टूल्स, मोबाइल ऐप्स और सोशल मीडिया के जरिए लोग हिन्दी और अन्य भाषाओं के बीच सरलता से संवाद कर सकते हैं। यूट्यूब, इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म पर भाषाओं की मिश्रित प्रयोगशैली (जैसे हिन्दी मराठी या हिन्दी तमिल) लोकप्रिय हो रही है। तकनीक ने हिन्दी और भारतीय भाषाओं के बीच की दूरी को आभासी सेतु के माध्यम से पाट दिया है।

हिन्दी और भारतीय भाषाओं के बीच का परस्पर सद्भाव केवल भाषाई संपर्क नहीं, बल्कि संवेदनात्मक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता का प्रमाण है। यह संभव दिखाता है कि विविधता के बावजूद भारत एक भाषाई राष्ट्र के रूप में संगठित और सशक्त है। हिन्दी, अपने लचीलेपन और समावेशी प्रवृत्ति के कारण, न केवल एक भाषा बल्कि अन्य भाषाओं की सहयोगिनी बनकर उभरी है। हमें इस समभाव को पहचानकर भारतीय भाषाओं के बीच सहयोग, अनुवाद और आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे भारत की भाषिक आत्मा और सांस्कृतिक शक्ति और अधिक उजागर हो सके।

"हिंदी नहीं विरोध में, हर भाषा के साथ सहयोग में"

•••

चंद्रेश प्रज्ञा वर्मा
तकनीकी अधिकारी 'सी' (समाज कार्य)
आईसीएमआर – राष्ट्रीय कैंसर रोकथाम एवं अनुसंधान संस्थान
आई –7, सेक्टर –39,नोएडा–201301

फिर वही बातचीत

फिर वही बातचीत चाहिए,
वही दुलार, वही प्रीत चाहिए,
चाहे हो सर्दी की छुट्टियां या गर्मी की छुट्टियां,
वही गांव ,नानी का घर, वही अल्हड़पन ,वही मस्ती,वही संगीत चाहिए,
उसी पीपल के छैंया तले ईमली के चटकारे लेना,
आम के बगीचे में अमिया समेटना,
फिर वही बचपन के मीत चाहिए,
फिर वही बातचीत चाहिए,
नानी के साथ लूडो के मजे लेना,
साथ नाना के नदी किनारे टहलने जाना,
फिर वही दिन, वही सुरमई शाम,
धुन प्यारी –सी वही लोकगीत चाहिए,
फिर वही बातचीत चाहिए,
नदिया की नील लहरों में ,
उगते सूरज की चमकती –सी छवि ललित चाहिए,
खिलते कमल पुष्प की आभा,
जल पर प्रतिबिंबित चाहिए,
चाहिए, दूर–दूर तक फैली खेतों की हरियाली,
डूबते सूरज की लाली,
गागर लिए पनिहारीनों की नोक– झोंक,
गायों के गले में बंधी घंटियों की रुनझुन ध्वनि
फिर वही प्रगीत चाहिए,
गांव के वह मिट्टी की खुशबू,
वह प्यारी– सी बोलचाल की भाषा,
आंखों में लिए नई आशा,
कैसे हो भैया, सब हाल–चाल ठीक ना?
कभी समय मिले तो घर आ जाना,
अम्मा पूछ रही थी, आकर मिल जाना,
वही दुलार वही प्रीत चाहिए,
फिर वही बातचीत चाहिए।।

●●●

मीता रानी बेहेरा
सहायक निदेशक (राजभाषा)
नवोदय विद्यालय समिति (मुख्यालय) नोएडा

धुँआ सा गुजरता है

भूमिका

'धुँआ सा गुजरता है' कविता, प्रकृति की सुंदरता को शब्दों में बाँधने का एक प्रयास है। साथ ही साथ यह इसके क्षय होने पर व्यथा का आभास भी है। यही दृश्य मनुष्य के अन्तर्मन का भी है। मनुष्य– अन्तर्मन का संवरना व अवसाद में जाना भी प्रकृति की एक उपमा ही तो है।

यह शांति का शोर पुनः आशाओं पर मंडरा रहा, उजली–उजली किरणें बीती, तम शनैः शनैः गहरा रहा,
फिर से रजनी का राज कोई राज उजागर करता है, कुछ दृष्टि का प्रयास है, पर धुँआ सा गुजरता है।
रविकर की लालिमा, जीवंतता का पर्याय, आशाओं की प्रेरणा, सौन्दर्य का निकाय।
यों शुकः–पिकः उन्मुक्त हो, चारों दिशाओं मे झूम उठे, सहर्ष सहस्रों स्वर, शुभ प्रातः में गूंज उठे।

उस पौध में धीरे–धीरे इक कली उभरती सी, भँवरों और फूलों की प्रीत धीरे–धीरे बढ़ती सी,
नीर की कल–कल दरिया को सुख का आभास कराती है,
यों बाग में हर इक ध्वनि ही अदृश्य रंग भर जाती है।
शांत है वो सब मंजर,सब अंत शांत जान पड़ता है,
कुछ दृष्टि का प्रयास है, पर धुँआ सा गुजरता है।

यहाँ अब कोई किरण नहीं, बस रजनी का वास है, भँवरों–फूलों का अस्तित्व, बस यादों का परिहास है,
दरिया की शुष्क धरा देखो,जैसे तो नीर था ही नहीं, परिंदे सब चले गए, इनको भी धीर था ही नहीं।
कल तक ध्वनि जो कानों में, थी सुनने को वो तरस गए,
कुछ बरसेगा अब पता नहीं, लगता है बादल बरस गए।
शांति के शोर में सब नितांत शांत ही उभरता है,
कुछ दृष्टि का प्रयास है, पर धुँआ सा गुजरता है।

•••

विमल किशोर
प्रारूपकार
ऊपरी यमुना नदी बोर्ड, नोएडा

अनुसंधान के क्षेत्र में हिंदी भाषा का बढ़ता महत्व

किसी भी राष्ट्र के लिए यह आवश्यक है की वह वैज्ञानिक एवं तकनीकी रूप से स्वाबलंबी हो और उन्नति करे। हिंदी वैश्विक महत्व की भाषा है, क्योंकि यह संचार, शिक्षाऔर व्यवसाय के अवसर खोलती है। हिंदी कई देशों में व्यापक रूप से पढ़ाई और सीखी जाती है। यह सांस्कृतिक समझ और सहयोग को बढ़ावा देने में मदद करती है। अनुसंधान एक महत्वपूर्ण क्रिया है जो हमें नई जानकारी प्राप्त करने और समस्याओं के समाधान के लिए विशेष तरीके से तैयार करती है। हिंदी भाषा में अनुसंधान के महत्व और इसका प्रभाव विशेष रूप से बढ़ चुका है। खोजो की सहायता से ही हिंदी काल को क्रमबद्ध किया जा सका है, भाषा के क्षेत्र में शोध के कारण ही भाषाओं का संरक्षण हो पाया है। शोध के कारण ही हिंदी के क्षेत्र में निरंतर विकास देखने को मिलता रहा है। हिंदी भाषा का अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान है। हिंदी में अनुसंधान करने से न केवल हिंदी भाषी समुदाय को लाभ होता है, बल्कि यह अनुसंधान को व्यापक बनाने में भी मदद करता है ।

विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में हुए विकास एवं लाभ की जानकारी सभी तक पहुंचे इसके लिए यह जरूरी है की वह ऐसी भाषा में हो जिसको अधिकतर तक लोग समझते हों और हिंदी देश भर में संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित है । भारत में कई संस्थान है, जो हिंदी माध्यम से अपने शोध और अनुसंधान के लेखों को आम नागरिक तक पहुँचाने का प्रयास करते है जैसे डीआरडीओ, बार्क, सीएसआईआर, दिल्ली विश्वविद्यालय, आईसीएआर, आई सी एम आर अन्य संस्थानों ने भी हिंदी में अपने शोध पत्रों के सार को आम नागरिक तक पहुँचाने का प्रयास किया है । कैंसर अनुसंधान के क्षेत्र में राष्ट्रीय कैंसर रोकथाम एवं अनुसंधान संस्थान जो भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR) के अंतर्गत कार्यरत एक प्रमुख संस्थान है, देश में कैंसर से संबंधित वैज्ञानिक अध्ययन, रोकथाम रणनीतियों के विकास, जनजागरूकता तथा नीतिगत सुझावों के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

संस्थान का एक सराहनीय प्रयास यह है कि उसने अपने विभिन्न अनुसंधान अध्ययनों, वैज्ञानिक शोध–पत्रों तथा उनके निष्कर्षों को हिंदी भाषा में संक्षेपित रूप में उपलब्ध कराया है, ताकि कैंसर से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी केवल विशेषज्ञों तक सीमित न रहकर आमजन तक भी सरलता से पहुँचे। (https%//nicpr-org/abstract-of-published-articles/) NICPR की यह हिंदी सामग्री देश के विभिन्न भाषायी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों तक वैज्ञानिक जानकारी पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभर रही है। यह कदम न केवल जन–स्वास्थ्य को सुदृढ़ करता है, बल्कि कैंसर की रोकथाम और नियंत्रण के राष्ट्रीय प्रयासों को अधिक प्रभावी और व्यापक बनाता है।

अनुसंधान विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास का मूल आधार है। यह हमें नई जानकारी प्राप्त करने, समस्याओं के समाधान तक पहुँचने और सामाजिक परिवर्तन को गति देने में मदद करता है। हिंदी भाषा में अनुसंधान का प्रसार न केवल भाषा के विकास में

सहायक है, बल्कि इससे हमारी संस्कृति और समाज की विभिन्न वर्गों तक विज्ञानिक जानकारी का पहुँचना भी संभव होता है। हिंदी भाषा में अनुसंधान के क्षेत्र में विभिन्न विषयों पर काम हो रहा है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान, मानविकी, पर्यावरण और सांस्कृतिक अध्ययन जैसे क्षेत्रों में हिंदी भाषा का उपयोग बढ़ रहा है। विभिन्न सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा अनुसंधान प्रोत्साहन देने के प्रयास इस क्षेत्र में गहराई ला रहे हैं।

हिंदी में अनुसंधान के क्षेत्र में सरकारी और गैर–सरकारी संगठन भी प्रोत्साहन दे रहे हैं। इसके लिए विशेष योजनाएं, अनुदान और अन्य संगठनात्मक सहायता प्रदान की जा रही है ताकि हिंदी में अनुसंधान के क्षेत्र में विकास की गति बढ़ाई जा सके। हालाँकि हिंदी में तकनीकी लेखन में कुछ कठिनाइयाँ भी है जिसके कारण मौलिक लेखों का अभाव है केवल हिंदी अनुवाद से शोध पत्रों को पूर्ण रूप से प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। लेकिन बदलती तकनीकों ने हिंदी में कार्य करने को बेहद सुगम एवं सरल बनाया है। इंटरनेट पर हिंदी लेखन में सहयता के विभिन्न साधन एवं सॉफ्टवेर उपलब्ध है। आधुनिक युग में कंप्यूटर में हिंदी में कार्य करना काफी सरल है गूगल इनपुट टूल, अनुवादिनी सॉफ्टवेर, गूगल ट्रांसलेट, ऑनलाइन हिंदी टाइपिंग, तकनीकी एवं वैज्ञानिक हिंदी शब्दकोश आदि अन्य साधन उपलब्ध है जो हिंदी में कार्य करना बेहद आसान कर देते है ।

हिंदी में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए सुझावः

हिंदी भाषा को प्रोत्साहित किया जाए एवं अधिक से अधिक प्रयोग कर अनुसंधान के क्षेत्र में भी इसकी स्थिति को बेहतर और सुद्रढ़ किया जाए एवं अनुसंधान के लिए संसाधनों को बढ़ने के प्रयास किये जाए। समय समय पर हिंदी में अनुसंधान के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाएं, जिससे कि अनुसंधान से जुड़े लोगों की जानकारी अद्यतन होती रहे और हिंदी भाषा को प्रयोग करने की नई तकनीकों से अवगत रहे । हिंदी में आलेखों एवं शोध पत्रों को प्रस्तुत करने के लिए मंचों एवं जर्नल पत्रिकाओं को और बढ़ावा देना चाहिए इस प्रकार, हिंदी भाषा में अनुसंधान के क्षेत्र में विभिन्न विषयों पर व्यापक कार्य हो रहा है और इसे बढ़ावा देने के लिए सरकारी और गैर–सरकारी प्रयास भी बढ़ रहे हैं। यह विकास स्थानीय स्तर से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक भारतीय अनुसंधान को ग्लोबल प्लेटफॉर्म पर भी पहुँचने में मदद कर रहा है। हिंदी में अनुसंधान के भविष्य का संदेश यह है कि यह विकास और वैश्विक समर्थन प्राप्त कर रहा है। नए युवा अनुसंधानकर्ताओं की उत्कृष्टता, विशेषतः हिंदी भाषा में, नई दिशाएँ खोल सकती हैं और समस्याओं के नए समाधान प्रस्तुत कर सकती हैं।

"अनुसंधान के क्षेत्र में हिंदी का हो रहा प्रचार –प्रसार,
नई तकनीक,नया विकास हिंदी में हो रहा अपार
नए नए शोध के ज्ञान को जन जन तक पहुचाएंगे,
हिंदी भाषा को उन्नत कर नया आयाम दिलाएंगे"

●●●

डॉ. प्रशांत कुमार सिंह
वैज्ञानिक–ई और एसोसिएट प्रोफेसर
आईसीएमआर–राष्ट्रीय कैंसर रोकथाम एवं अनुसंधान संस्थान
आई –7, सेक्टर –39,नोएडा–201301

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) नोएडा की 48वीं बैठक
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान, सेक्टर-62, नोएडा के सौजन्य से आयोजित की गई।

प्रभु और सृष्टि

हो रही थी प्रतीत, प्रभु को सृष्टि अधूरी, तो बैठे थे प्रभु संताप में,
थे व्यथित की अब क्या नया मैं रचूँ, जब रच गया पूरी सृष्टि मैं,
कुछ पल ही मात्र में,
पेड़, नदी, समुद्र और पहाड़, जीव जन्तु अनगिनत,
और नाना प्रकार।
सब मोहक, कृत्रिम और सुंदर, देव, दानव, सब होते मोहित
देख ये सुंदर संसार।
पल भर को दंब भरते प्रभु, और होते भाव–विभोर,
बस क्षण भर बाद ही, होता प्रतीत रच गया सब मैं,
अब रहा न शेष कोई विचार।
कोमल भावना लेती हीलौरे हृदय में, और कभी होता नसों में पौरूष सवार,
पल में समझ गए प्रभु, क्या रह गया शेष,
जिसका अब करू मैं नव निर्माण।
प्रेम, वात्सल्य, स्नेह, करुणा से सुंदर, कोमल नारी बनी,
सगज, कठोर, बलवान, साहसी वीर और शक्तिशाली, बना पुरुष,
दोनों पर पूरक बनें, चले अब इन दोनों से ही पूर्ण संसार,
सुर–असुर देव दानव, करने लगे नमन और बोले, प्रभु करा अब जा आपने चमत्कार,
हुए प्रभु प्रसन्न अब, देख अपना सृजन, किंचित् फिर मंद–मंद मुसकाए,
देव दानव फिर घबराए, और बोले– प्रभु अब हो गया बस, दे दिया आपने, जगत को अलौकिक पुरस्कार।
प्रभु हँसे और बोले–पूर्ण एक और पूर्णदो, और हो पृथक पृथक तो क्या है इसमे मनोहर और ललित।
जब हो भोर, जब हो उजाला अंधकार में, जब श्याम में थोड़ी लाली मिलें, हो पौरुष नारी व्यवहार में,
और कोमलता बनी रही, कठोर पुरुष बलवान में,
तब ही सृष्टि सजें, तब ही जीवन को जीवन मिलें, बस... घोल दिया प्रभु ने दोनों को,
नारीत्व को थोड़ा पौरुष मिला, और पुरुष को मिली थोड़ी करुणा,
और पूर्ण हो गया नव निर्माण।
अब जा प्रभु हुए संतुष्ट, और मिले संसार को दो जीव–
अनोखे, अनमोल और विशिष्ट, चल पड़ा चक्र जीवन का,
और साथ दोनों के होने से ही, जग और जीवन का कल्याण है ,
है नमन प्रभु तुम्हें, है नर–नारी, सुंदर रचना तुम्हारी, तुम्हें मेरा कोटि–कोटि प्रणाम हैं,
तुम्हें मेरा कोटि–कोटि प्रणाम हैं

•••

ममता चंद्रा, प्रशासनिक अधिकारी
सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया
सेक्टर–19,नोएडा

उपेक्षित कहानी

अंतर्मन ये पूछ रहा है, कहाँ गया आँखों का पानी
रोम रोम अब सुना रहा है, घोर उपेक्षित एक कहानी
कौन था मेरी जिद के आगे, जो खुद घोड़ा बन जाता था
मुझे हंसाने की खातिर जो, स्वयं तमाशा बन जाता था
किसने मुझे लगा सीने से, ईश्वर का आभार जताया
मुझमें अपना अक्स देखकर कौन भाग्य पर इठलाता था
किसने अपनी इच्छाओं की, मेरी खातिर दी कुर्बानी
रोम रोम अब सुना रहा है, घोर उपेक्षित एक कहानी

पड़ा जो मैं बीमार दौडकर, कौन डॉक्टर को लाया था
कौन मेरी शिक्षा की खातिर, साधन सभी जुटा पाया था
कभी पड़ा जो मुझ पर संकट, कौन बना था रक्षक मेरा
कौन जहाँ में मुझे बचाने, हर मुश्किल से टकराया था
क्यों उसके बिन सारी दुनिया, लगती है मुझको वीरानी
रोम रोम अब सुना रहा है, घोर उपेक्षित एक कहानी
अपने कद से ऊँचा होता देख, खुशी किसको होती थी
कौन आत्मा मेरे अवगुण देख के, छुप–छुप कर रोती थी

किसकी छाती फूल रही थी, मुझको बढ़ता देख जगत में
कौन जिंदगी मौन साधकर, मेरा गम दिल में ढोती थी
मुझे मिले सुख इस कोशिश में, खपी कौन सी थी जिंदगानी
रोम रोम अब सुना रहा है, घोर उपेक्षित एक कहानी
इस दुनिया में मेरे हित में, कौन मुझी से टकराया है
सही राह पर ले जाने को, किसने तन मन झुलसाया है
सिर्फ भला करने को मेरा, मुझसे मोल बुराई ली है
किसने कड़वा सच बोला है, नहीं कभी भी भरमाया है

किसके दिल को दुखा दुखाकर, करता रहा सदा मनमानी
रोम रोम अब सुना रहा है, घोर उपेक्षित एक कहानी
काश देख लेता कुछ पहले, जो दिखलाई आज दिया है
साथ साथ चल लेता उसके, जिसने ये सर्वस्व दिया है
मेरी पीड़ा भी कम होती, उसको भी कुछ राहत मिलती
उसको भी कुछ सुख मिल जाता, जिससे मैंने जन्म लिया है
दर्द भरी है कथा पिता की, भूल चुके हम रीत पुरानी
रोम रोम अब सुना रहा है, घोर उपेक्षित एक कहानी

●●●

डॉ. ईश्वर सिंह राजभाषा अधिकारी
तेल उद्योग सुरक्षा निदेशालय,नोएडा

हिन्दी भाषा की बोलियां एवं राजभाषा

प्रस्तावना

भारत एक बहुभाषी देश है जहां भाषायी विविधता इसकी सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग है। इस विविधता में हिंदी भाषा का अपना विशेष स्थान है। हिंदी न केवल भारत की सबसे अधिक बोली समझे जाने वाली भाषा है, बल्कि यह जनमानस के हृदय की भाषा है। संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया है। हिंदी का स्वरूप समृद्ध, विशाल और विविधताओं से भरा हुआ है, क्योंकि इसके अंतर्गत अनेक बोलियां शामिल है जो इसे जिवन्तता प्रदान करती है। हिंदी सभी भाषाओं एवं बोलियों की सहेली कहा जाता है, क्योंकि हिंदी में सभी भाषाओं एवं बोलियों को समाहित करने की क्षमता है।

हिंदी भाषा की उत्पत्ति एवं स्वरूप

हिंदी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। प्राचीन काल में संस्कृत से अपभ्रंश और शौरसेनी प्राकृत के माध्यम से हिंदी का विकास हुआ है। वर्तमान में हिंदी ने समय के साथ–साथ अनेक बोलियों को अपने अंतर्गत समाहित किया है। हिंदी का व्याकरण, शब्द–संपदा, लिपि (देवनागरी), और साहित्यिक परंपरा इसे अत्यंत सशक्त एवं समृद्ध बनाते है।

हिंदी की प्रमुख बोलियां

हिंदी भाषा के विशाल एवं संमृद्ध परिवार में अनेक बोलियां सम्मिलित है, जो क्षेत्रीय विविधता के अनुसार भिन्न–भिन्न रूपों में प्रचलित है। हिंदी की कुछ प्रमुख बोलियां निम्नलिखित है–

1. **खड़ी बोली**– यह आधुनिक मानक हिंदी की आधारभूत बोली है। दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और हरियाणा के क्षेत्रों में बोली जाती है।
2. **ब्रजभाषा**– मथुरा, आगरा और आसपास के क्षेत्रों में प्रचलित है। यह प्रेम और भक्ति की भाषा मानी जाती है। सूरदास के पदों में इसकी मिठास स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।
3. **अवधी**– लखनऊ, अयोध्या और पूर्वी उत्तर प्रदेश में बोली जाती है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस जैसी महान कृति इसी बोली में लिखी है।
4. **बुंदेली**– बुंदेलखण्ड क्षेत्र की बोली, जिसमें वीरता और लोकजीवन की गूंज सुनाई देती है।
5. **बघेली, हरियाणवी, कन्नौजी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मालवी** आदि बोलियों में भी हिंदी के संमृद्ध स्वरूप का हिस्सा हैं।

इस सभी बोलियों से मिलकर हिंदी को व्यापकता और जीवंतता मिलती है। हर बोली की अपनी ध्वनि, लय और सास्कृतिक पहचान है।

हिंदी की राजभाषा के रूप में स्थिति

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी को देवनागरी लिपि में भारत की राजभाषा घोषित कया गया है। साथ ही अंग्रेजी को सह–राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। राजभाषा का अर्थ है– शासन, प्रशासन और सरकारी कार्यों में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा।

संविधान के अनुसार, केन्द्रीय सरकार अपने कार्य हिंदी में करने के लिए प्रतिबद्ध है तथा केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में भी राजभाषा नीति के अनुसार हिंदी का प्रयोग बढ़ाया जा रहा है। हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार और प्रोत्साहन हेतु राजभाषा विभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां और राजभाषा पुरस्कार योजनाएं कार्यशील हैं।

हिंदी की प्रगति एवं महत्व

आज हिंदी केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान बना चुकी है। विश्व के अनेक देशों जैसे–मॉरीशस, नेपाल, फिजी, त्रिनिदाद, अमेरिका, कनाडा, और यूके में हिंदी बोली और समझी जाती है।

भारत में हिंदी एकता की कडी के रूप में कार्य करती है। यह उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम तक भारतीय संस्कृति को जोडने का माध्यम है। साहित्य, पत्रकारिता, शिक्षा, सिनेमा और प्रशासन में हिंदी का प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है।

उपंसहार

हिंदी भाषा केवल एक संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीयता की पहचान है। इसकी बोलियां इसकी जड़ों की शक्ति है, जो इसे जनभाषा बनाए रखती है। हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिलना गर्व की बात है, किन्तु हमारा दायित्व भी है कि हम हिंदी का प्रयोग बढ़ाएं, इसे सम्मान दें, समृद्ध करें और आने वाली पीढियों तक इसकी गरिमा बनाए रखें।

हिंदी हमारे गर्व, संस्कृति और एकता का प्रतीक है।

•••

चंद्रप्रकाश, हिंदी अधिकारी
फुटवियर डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट
सेक्टर–24, नोएडा

मुझे नहीं खोना

मुझे नहीं खोना, मेरे अपनों को। सही बताऊँ तो मुझे डर लगता है मेरे अपनों को खोने से। यह संसार का नियम है जो आता है वो जाता भी है, मानती हूँ हम नियति को नहीं बदल सकते पर फिर भी मन ही मन डर लगता है। कोई कितना भी कठोर स्वभाव का क्यो ना हो, पर उस कठोर व्यक्ति के हृदय में भी अपनों के लिए एक ममता का भाव होता ही है। पर क्या हो जब आपको यह मालूम हो कि आपका अपना आपकी आखों के सामने ही धीरे–धीरे खत्म हो रहा है।

मेरा विषय आजकल हो रही गंभीर बीमारियों पर है। ब्रेन ट्यूमर, कैंसर, हार्ट अटैक मानो दिन–ब–दिन आम हो गए हैं। ऐसा नहीं है कि मुझे मालूम नहीं है कि मोमोज मैदा से बनते हैं और वो मेरी आंतो और किडनी को नुकसान पहुंचाते हैं। मुझे मालूम है कि समोसे को पॉल्मऑईल में डीप फ्राई करते है और एक बार नहीं मानो कितनी ही बार वो तेल गरम होता है, पर मैं क्या करूँ, मैं जब भी रास्ते से गुजर रही होती हूं मेरा मन फिसल जाता है और मेरे कदम अपने आप एक पानीपुरी के ठेले के पास जाकर रुक जाते है। ऐसा नहीं है कि घर पर हेल्दी पानीपुरी, समोसा नहीं बनाया जा सकता। आजकल सभी रेसिपी उपलब्ध तो है यूट्यूब, इंटरनेट पर। पर सही बताऊँ तो इतनी मेहनत करे कौन और मेहनत करने के लिए बॉडी में विटामिन, B12, कैल्सियम ये सब भी तो होने चाहिए। जब भी खून की जांच करवाओ, कुछ ना कुछ तो कम आयेगा ही। मैं सोचूँ कि मैं अपनी मम्मी जितना एक्टिव हो कर सारा काम करूँ तो वो मै चाह कर भी नहीं कर पाती। पर मैं क्या ही करूँ आजकल खान–पान और जीवनशैली भी तो वैसी नहीं है आजकल हो रही सभी गंभीर बीमारियों का एक ही कारण है– "बदलती जीवनशैली" जीवनशैली को बदलने के लिए कई लेख आपको इन्टरनेट पर मिल जाएंगे परन्तु उसे पढ़ने के लिए मुझे अपने मोबाईल से इंस्टाग्राम, फेसबुक सबको अनइंस्टॉल करना पड़ेगा। आजकल रील देखने की आदत इतनी लग गई है कि मानो 5 मिनट का समय भी मिल जाता है तो तीन–चार रील स्ट्रॉल कर लेती हूँ।

मेरे द्वारा इस लेख को लिखने का उद्देश्य यही है कि मै स्वयं को और आपको उस सच्चाई से अवगत करवाऊँ जो हम सब जानते हुए भी अनजान बने हुए हैं। मैने उन लोगो को अपनी आँखो के सामने इन गंभीर बीमारियों से जूझते हुए देखा है जिनके साथ मैने अपने जीवन के कई हसीन लम्हे बिताए हैं।

अचानक एक दिन सुबह उठे और हल्के चक्कर आए जब जाँच करवायी तब मालूम हुआ कि कैंसर की लास्ट स्टेज है, कुछ ही दिनो का जीवन बाकी हैं। अचानक दिल मे थोडा दर्द हुआ, उसी समय अस्पताल पहुंचे, मालूम हुआ कि हार्ट अटैक आया है यदि स्टैण्ड लगवाया तो चार–पाँच वर्ष का जीवन मिल जाएगा अन्यथा उतना जी लो जब तब साँस चल रही है। एक दिन अचानक ब्लड की उल्टी हुई, मालूम हुआ ब्लड कैंसर है। जब यह मालूम होता है कि जीवन के कुछ ही लम्हे शेष बचे है उस समय शरीर सुन्न हो जाता है मानो लगता है कि सब कुछ रूक गया है। हम अब भी वही होते है बस अब देखने का नजरिया बदल जाता है। आँखे अब भी वही है, शरीर अब भी वही है पर व्यक्तित्व बदल जाता है। यह दर्द

जितना उस व्यक्ति को महसूस हो रहा होता है, उससे कही ज्यादा उसके साथ जीने वाले हर एक सदस्य को महसूस हो रहा होता है।

बहुत मुश्किल है, हर पल किसी अपने को मौत के समीप जाते हुए देखना । ऐसा लगता है दुनिया की सारी खुशी उसके कदमों मे लाकर रख दे। हम 60 वर्ष के व्यक्ति को 4 वर्ष के बच्चे जितना प्यार देने लगते हैं। उस समय हमे लगता है कि जिस पैसे की पीछे हमने अपनी दिनचर्या बदल ली, वो सब व्यर्थ है। मुझे मालूम है कि सुबह खाली पेट उठते से ही योगा एवं प्रणायाम करना चाहिए। कुछ ही समय के लिए चाहे, घास पर नंगे पैर चलना चाहिए। मुम्बई का बडा पाव मेरे मन को तृप्त करेगा पर ताकत मुझे हरी सब्जी और रोटी खाने से ही आएगी। हम खुद तो इस जीवनशैली की ओर अग्रसर हो रहे है, साथ ही अपने बच्चो को भी इसमें धकेल रहे हैं। बच्चों के लंच बॉक्स में पराठे की जगह अब जैम–ब्रेड मैगी ने ले ली हैं। क्या हम एक छोटा सा बदलाव नहीं कर सकते ? हम खुद ही खुद को चैलेंज कर बदलने का एक मौका नहीं दे सकते? हम भी अपने पेरेन्ट्स जितना कार्य में एक्टिव नहीं हो सकते?

वैसे तो मेरी लेखनशैली इतनी अच्छी नहीं है फिर भी मेरे द्वारा अपने मन की बात को कुछ शब्दो में पिरोकर व्यक्त करने की एक छोटी सी कोशिश की गई है –

मानती हूँ अब मैं बड़ी हो गई हूं,

फिर भी मुझे अपनो को खोने से डर लगता है।
मानती हूँ अब नया घर, नयी जिम्मेदारी सम्भाल ली है मैने,
फिर भी मुझे माँ के आँचल को छोड़ने से डर लगता है।
मैं हर वक्त, हर लम्हे को रोक लेना चाहती हूँ,
मैं अपनो पर आयी हर बलाओ का रूख मोड़ लेना चाहती हूँ,
मैं दुआओं की डोर से, हर रिश्ते को थामे रखना चाहती हूँ,
मैं हर रिश्ते को उम्रभर निभाना चाहती हूँ।
जिन अपनों के चेहरों की मुस्कान मे मेरी दुनियां बसती है,
मुझे उस मुस्कान को खो जाने से डर लगता है।
मैं उन्हें हर गम और मर्ज से दूर रखना चाहती हूँ
क्योकि मुझे तो अपनो को खोने से डर लगता हैं।
ज्यादा कुछ बदलना नहीं है अपनी जीवनशैली में,
ब्रेड, मैगी की जगह बस मूंग चिल्ला, पनीर को अपनाना है।
नियमित व्यायाम और योग को अब जीवन में लाना है।

स्वस्थ आहार और व्यायाम के संगम से,
अब हमे जीवन को स्वस्थ एवं खुशहाल बनाना हैं....

●●●

अंकिता जैन
तकनीकी अधिकारी
वस्त्र आयुक्त का क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा

"आसमान ही सीमा है" - एक गहरी सोच का सफर

हम अक्सर किसी को प्रेरित करने के लिए कहते हैं -"Sky is the limit", यानी आसमान ही सीमा है। लेकिन क्या सच में आसमान की कोई सीमा है? या फिर सीमा हमारे मन की है? उड़ान आसान नहीं होती। कभी किसी पक्षी की पहली उड़ान को ध्यान से महसूस कीजिए –उसके फैले हुए पंख, हल्की कंपन, घबराहट, डर और उम्मीद –सब कुछ एक साथ उसमें भरा होता है। हम दूर खड़े होकर सिर्फ कहते हैं–"उड़ जा... आसमान तेरे लिए खुला है।" पर वो एक छोटे से पंख की थरथराहट... वो पहले कदम जैसी झिझक... हम शायद महसूस ही नहीं करते।

आज की दुनिया में सफलता का पैमाना भी बड़ा अजीब है। जिसने अपने प्रोफेशन या सोशल सर्कल में कुछ हासिल कर लिया–हम तुरंत उसे सफल मान लेते हैं। पर उसके पीछे कितनी मेहनत लगी, कितने दिन कुएँ में पत्थर की तरह अंधेरे में बिताए, कितना पसीना बहा–इन बातों पर चर्चा शायद ही होती है। हमें दिखाई देता है तो सिर्फ **मंजिल**। मंजिल तक पहुँचने का रास्ता नहीं दिखाई देता। असल बात यह है कि **सफलता के भी कई मायने** हैं। हर पक्षी आसमान में उड़ता है, लेकिन हर किसी की अपनी **ऊँचाई**, अपना **तरीक़ा** और अपनी **हद** होती है। अगर वह अपनी सीमा में खुश है, संतुष्ट है, आराम से उड़ पा रहा है–तो वही उसकी सफलता है।

तुलना करने में कोई बुराई नहीं, पर तुलना का मक़सद खुद को छोटा या बड़ा साबित करना नहीं होना चाहिए। तुलना तब अच्छी है जब वह हमें जड़ से जोड़कर रखे, न कि हमें इतना ऊँचा चढ़ा दे कि लौटने का रास्ता ही न बचे।

पौराणिक कथाओं में रामायण में दो भाई–**संपाती और जटायु**–अपनी वीरता, साहस और उड़ान के लिए प्रसिद्ध थे। एक दिन दोनों में यह चर्चा शुरू हुई कि कौन ज्यादा ऊँचा उड़ सकता है? जटायु ने अपनी सीमाओं को समझते हुए सीमित ऊँचाई तक उड़ान भरी। वह जानता था कि हर उड़ान की एक सीमा होती है–और जमीन से जुड़े रहना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

लेकिन संपाती... उसने सोचा कि वह सूरज के पास तक उड़ सकता है। वह चढ़ता गया, चढ़ता गया... और सूर्य की गर्मी ने उसके पंख जला दिए। वह धरती पर गिर पड़ा। यह कहानी हमें बताती है कि –**ऊँची उड़ान तभी सही है जब लौटने की ताक़त और दिशा दोनों साथ हों।** और यह भी कि **अति हमेशा नुकसान करती है –चाहे वह महत्वाकांक्षा की हो या अहंकार की।**

संपाती की कहानी यह भी सिखाती है कि किसी भी उन्नति में परिवार, संबंध और धरती से जुड़ाव बहुत आवश्यक है। जहाँ रिश्ता टूट जाता है, वहाँ उड़ान का आनंद भी फीका पड़ जाता है।

सफलता का अर्थ सिर्फ बड़ा बनना नहीं है –सफलता का अर्थ है पूरा बनना। ऐसी उड़ान भरना जिसमें आपका मन शांत रहे, अपनों का हाथ आपके साथ रहे, जड़ें मिट्टी से जुड़ी रहें और आसमान मिले उतना, जितना आपकी प्रकृति को सुहाए। कभी–कभी छोटी ऊँचाई पर उड़कर खुश रहना भी एक बड़ी सफलता होती है। क्यों कि **सफलता वह नहीं जो लोग देख लें... सफलता वह है जो आप महसूस कर लें।**

यदि कोई पक्षी इतना ऊँचा उड़ जाए कि उसके अपने ही पीछे छूट जाएँ, तो उड़ान भले ऊँची हो, पर अधूरी हो जाती है। और यदि कोई पक्षी अपनी सही ऊँचाई पर उड़कर भी मुस्कुरा सके, तो वही उसकी सच्ची सफलता है।

इसलिए, आसमान में उड़िए –मगर इतना कि **आपकी सोच अपनों को खो न दें** और इतना भी नहीं कि **आप खुद भी जखमी न हो जाएँ।**

उड़ान वही अच्छी है जिसमें मन भी साथ चले और रिश्ते भी। यही आपका आसमान है। यही आपकी सीमा है। और यही आपकी **सच्ची सफलता है।**

•••

संजय कुमार
वैज्ञानिक 'एफ'
सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया
सैक्टर–29, नोएडा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) नोएडा की 48वीं बैठक के दौरान नोएडा स्वर के दसवें अंक का विमोचन

राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केंद्र, नोएडा के सौजन्य से 29.04.2025 स्वरचित हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन

वापसी की राह

आज भी याद है, वो घर का सुंदर आँगन, जन्नत सी वादियों में बीता हुआ बचपन।
आज भी याद हैं, डल झील से लिपटे शिकारे, वादी में महकते केसर के फूल प्यारे–प्यारे।

कश्मीर था धरती पर जन्नत का मंजर, फिर आया ऐसा दिन, जब सपने हो गए बंजर।
"हिंदू हूँ मैं" यह जानकर मुझे इंसान न समझा गया, पल भर में, मेरे ही घर से मुझे बेघर कर दिया गया।

क्या कसूर था मेरा, जो एक पंडित कहलाया? इंसान हूँ, लहू मेरा भी लाल है... क्या यह काफी नहीं था?
रूह भी काँप उठी देखकर, था ऐसा वो मंजर, इंसानियत को छोड़, बस घोंप दिया गया सीने में ख़ंजर।

सुना है उस घर में अब बस रह गई हैं, खून से रंगी दीवारें, बिखरे हुए सपने, और खोया हुआ बचपन।
झेलम की लहरें भी अब आँसुओं–सी बहती थीं, घाटी का आँचल, लाशों की मंडी था।

अरे! यह वही शंकराचार्य के ज्ञान का प्रतिबिंब कश्मीर था, जहाँ धर्म नहीं, दर्शन था।
जो जन्नत सा सुंदर था,यह तेरा मेरा – नहीं यह हम सब का कश्मीर था।

फिर बदली तस्वीर, बदला गया संविधान, धारा 370 हटी – मिला गया जैसे खोया हुआ सम्मान।
कश्मीर की माटी फिर से गीत गाने लगी, मेरी घर वापसी की राह सजाने लगी।

सोचा था – अब न होगा कोई डर, हर सुबह होगी निडर, उजली और बेखबर।
मगर आज ... फिर, वही मंजर दोहराया गया, धर्म के नाम पर बाँटकर, हमें ही निशाना बनाया गया।

क्या सोचते हो – इस दहशतगर्दी से हम डर जाएंगे? अपनों की जान का हिसाब क्या यूँ ही छोड़ जाएंगे?
नहीं अब और न सहेंगे, अब जवाब ठोस होगा, आख़री साँस तक, हर वार पर प्रतिकार जोश होगा।

अब वक़्त है शब्दों से आगे बढ़ने का, सिर्फ संकल्प नहीं, हथियार उठाकर लड़ने का।
न्याय की मशाल को फिर से जलाएंगे, अपने घर वापसी की उम्मीद फिर से जगाएंगे।

•••

– **किरण वालिया**
परियोजना अभियंता
सी–डैक, नोएडा

तेरा शहर

तेरा शहर बेगाना–सा लगता है
सब कुछ है, ना जाने क्यूं
फिर भी वीराना–सा लगता है,

न वो इंसान है, न वो रिश्ते
सब पाट तले यहाँ पिसते है, यूं लगता है,
सब्र कहाँ है, जनाब लोगों में
सब छीन लेते है यहाँ धोखों में,
तेरे शहर की गलियों मे रौनक नहीं
सब कुछ बेरंग–सा लगता है,

दुआ ने भी दर्द का लिबास पहना हो, यूं लगता है
जब विश्वासघात किसी से मिलता है,
ये जमी, ये आसमां है वही
फिर भी अपना–सा नहीं लगता है,
तुझे मुबारक हो, तेरा शहर
मुझे तो मेरा घर ही, जन्नत–सा लगता है,
क्यूंकि मेरी 'मॉ' के आंचल में मुझे सारा जहाँ मिलता है

•••

पुष्पा रानी,सहायक (ए–III)
सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया
सैक्टर–29, नोएडा

डिजाइन पाठ्यक्रमों के लिए सर्वोत्तम शिक्षण पद्धतियाँ और एआई(AI) अपनाने की दिशा

आज के वैश्विक के वैश्विक परिवेश में डिजाइन शिक्षा केवल स्केच या उत्पाद निर्माण तक सीमित नहीं रह गई है। अब यह विद्यार्थियों के समग्र विकास, रचनात्मकता, और समस्या समाधान क्षमता के साथ–साथ तकनीकी दक्षता पर केंद्रित है। विशेषकर फुटवियर, लेदर प्रोडक्ट डिजाइन, फैशन डिजाइन, और रिटेल एवं फैशन मर्चेंडाइजिंग जैसे क्षेत्रों में शिक्षा का स्वरूप लगातार बदल रहा है। इस बदलते दौर में सर्वोत्तम शिक्षण पद्धतियों का अनुसरण करना प्रत्येक शिक्षक की जिम्मेदारी है।

डिजाइन शिक्षा का लक्ष्य केवल कुशल उत्पाद बनाना नहीं है, बल्कि ऐसे डिजाइनर तैयार करना है जो नवोन्मेषी, तकनीकी रूप से सशक्त और सामाजिक रूप से संवेदनशील हों। यदि पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों में एआई, अनुभव आधारित अधिगम, रचनात्मक स्वतंत्रता और सहयोगात्मक दृष्टि कोण जोड़ा जाए, तो डिजाइन शिक्षा वास्तव में भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप बन सकती है।

1. रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना (Encouraging Creative Thinking)

डिजाइन शिक्षा में विद्यार्थियों को खुला सोचने, कल्पना करने और विभिन्न तरीकों से अपनी बात रखने का अवसर देना चाहिए।

उदाहरण:

फुटवियर डिजाइन कक्षा में विद्यार्थियों को "भविष्य का टिकाऊ जूता" (Sustainable Future Footwear) तैयार करने का विचार दिया जा सकता है, जहाँ वे प्राकृतिक या अपसायकल्ड सामग्री का उपयोग कर अपनी रचनात्मकता दिखाएँ।

लेदर प्रोडक्ट डिजाइन के विद्यार्थी "मल्टीफंक्शनल बैग" या "स्मार्ट वॉलेट" जैसी अवधारणाओं पर कार्य कर सकते हैं।

2. सहयोगी अधिगम (Collaborative Learning)

डिजाइन एक सामूहिक प्रक्रियाहै। जब विद्यार्थी समूह में काम करते हैं, तो वे एक–दूसरे के विचारों, दृष्टिकोण और कौशल से सीखते हैं।

उदाहरण:

फैशन डिजाइन के विद्यार्थी समूह बनाकर" इंडियन हैंडलूम रीइंटरप्रिटेशन" पर कलेक्शन विकसित करें या रिटेल डिजाइन के विद्यार्थी किसी स्थानीय ब्रांड के लिए "विजुअल मर्चेंडाइजिंग प्रोजेक्ट" करें।

3. संचार एवं प्रस्तुति कौशल का विकास (Developing Communication & Presentation Skills)

डिजाइन विचारों को शब्दों और दृश्य माध्यमों से स्पष्ट रूप में व्यक्त करना आवश्यक है।

उदाहरण:

विद्यार्थियों को हर प्रोजेक्ट के अंत में अपने कॉन्सेप्ट की प्रस्तुति देना, मूड बोर्ड और स्टोरी बोर्ड तैयार करना तथा विचार प्रक्रिया (Design Rationale) समझाना सिखाया जाए।

4. आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक सोच (Critical & Analytical Thinking)

हर डिजाइन निर्णय का मूल्यांकन "क्यों" और "कैसे" के आधार पर किया जाना चाहिए।

उदाहरण:

फुटवियर डिजाइन में एर्गोनॉमिक्स का विश्लेषण कर यह देखना कि डिजाइन उपयोगकर्ता के आराम और संतुलन को कैसे प्रभावित करता है।

फैशन या रिटेल डिजाइन में बाजार के ट्रेंड और उपभोक्ता व्यवहार के आधार पर प्रोडक्ट पोजिशनिंग का अध्ययन करना।

5. माइक्रो–प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण (Learning through Micro Projects)

प्रत्येक विषय को छोटे, व्यावहारिक प्रोजेक्ट्स में बाँट कर सिखाया जाए। इससे विद्यार्थी निरंतर प्रयोग और अनुभव से सीखते हैं।

उदाहरण:

लेदर उत्पाद डिजाइन में "एक सप्ताह का प्रोटोटाइप प्रोजेक्ट" –जैसे कि एक कार्ड होल्डर या मिनी पर्स तैयार करना।

रिटेल कक्षा में "एक दिन का डिस्प्ले प्रोजेक्ट" –जहाँ विद्यार्थी किसी उत्पाद की थीम आधारित विंडो डिस्प्ले बनाएं।

6. वास्तविक जीवन से जुड़ा शिक्षण (Real-life Problem-Based Learning)

डिजाइन शिक्षा तभी सार्थक होती है जब वह वास्तविक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करे।

उदाहरण:

ग्रामीण क्षेत्र क`लिए किफायती, टिकाऊ फुटवियर डिजाइन करना या शहरी जीवन शैली को ध्यान में रखते हुए "स्मार्ट ट्रैवल बैग" विकसित करना।

7. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) **का समावेश** (Integration of AI in Design Education)

एआई अब डिजाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। यह न केवल उत्पाद विकास प्रक्रिया को तेज करता है, बल्कि विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच को नए स्तर पर ले जाता है।

AI उपयोग के क्षेत्र और उपकरण:

- **विजुअल आइडिया जनरेशन**: Midjourney, DALLE, Adobe Firefly, Ideogram आदि का उपयोग कर प्रारंभिक डिजाइन अवधारणाएँ बनाना।
- **3D मॉडलिंग और वर्चुअल प्रोटोटाइपिंग:** CLO3D, Blender, Rhino 3D, SolidWorks जैसे टूल्स से वास्तविक सिमुलेशन तैयार करना।
- **टेक्स्ट–टू–डिजाइनकमांड्स:** ChatGPT या Leonardo AI की मदद से डिजाइन कॉन्सेप्ट्स और ब्रांड कहानियाँ विकसित करना।
- **मार्केटरिसर्चऔरट्रेंडएनालिसिस:** AI आधारित डेटा टूल्स से उपभोक्ता व्यवहार और भविष्य के ट्रेंड का विश्लेषण।

8. डिजाइन थिंकिंग प्रक्रिया (Design Thinking Process)

विश्व स्तर पर मान्य यह प्रक्रिया विद्यार्थियों को उपयोगकर्ता केंद्रित दृष्टि कोण सिखाती है–

Empathize → Define → Ideate → Prototype → Test

हर डिजाइन को इस ढाँचे में सिखाया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी न केवल सुंदर बल्कि उपयोगी और अर्थपूर्ण डिजाइन बना सकें।

9. अंतर्विषयी अधिगम (Interdisciplinary Learning)

डिजाइन शिक्षा में विभिन्न विषयों का सम्मिलन विद्यार्थियों को समग्र दृष्टि प्रदान करता है।

उदाहरण:

फैशन और रिटेल विद्यार्थी मिलकर "ब्रांड लॉन्च प्रोजेक्ट" तैयार करें, जहाँ एक टीम प्रोडक्ट डेवलपमेंट संभाले और दूसरी टीम मार्केटिंग रणनीति तैयार करे।

10. सस्टेनेबिलिटी और नैतिक डिजाइन (Sustainability & Ethical Design)

हर डिजाइन प्रोजेक्ट में पर्यावरणीय संवेदनशीलता और नैतिक उत्पादन का ध्यान रखा जाए।

उदाहरण:

लेदर या फैब्रिक अपसायकलिंग, पर्यावरण–अनुकूल रंगों का उपयोग, और स्थानीय कारीगरों के साथ सहयोग के प्रोजेक्ट्स करवाना।

•••

अनूप सिंह राणा
वरिष्ठ संकाय
फुटवियर डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट, नोएडा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) नोएडा की 49वीं बैठक राष्ट्रीय जैविक संस्थान के सौजन्य से आयोजित की गई ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) नोएडा की 49वीं बैठक में वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए लिए सदस्य कार्यालयों को राजभाषा शील्ड प्रदान किए गए।

सच्ची प्रेम कहानी

मानो या न मानो, पर ये एक सच्ची कहानी है। बिलकुल सच्ची या सही मायनों में कहें तो एक सच्ची प्रेम कहानी जो आज तक शाश्वत और उपयुक्त है। यह आज भी हमारी सामने घटित हो रही है, निरंतर.....। आपको ये कहानी कहीं किसी भी ग्रंथ या लेखों में लिखी नहीं मिलेगी। चूंकि सत्य बहुत हल्का होता है, एक पंख के समान, इसीलिए कुछ किस्से–कहानियाँ समय की लहरों के साथ धीरे–धीरे हिचकोले खाते सदियों का फासला तय करते हैं। दूसरी तरफ झूठ का जहाज चाहे कितना ही बड़ा व भव्य क्यूँ न हो और चाहे झूठ इसमें बैठ कितना भी इतराये, उस जहाज में एक छेद जरूर रहता है जो समय के साथ बड़ा और बड़ा होता जाता है और अंततः झूठ समय की गहराइयों में कहीं डूब जाता है। और सत्य, जैसा मैंने कहा, पंख के समान हमारे ही कंधो पर बैठ अनंत शताब्दियों की यात्रा करता है।

तो जैसे हर कहानी के कुछ पात्र रहते है, इस सत्य कथा का पहला पात्र है हमारा प्यारा सा आलू, जो सुदूर कहीं पहाड़ियों के बीच बसता था। ये आलू, बहुत ही मिलनसार, दोस्ताना और हँसमुख है। इस आलू की मित्र मंडली की लिस्ट बहुत लंबी है। हर कोई इसको प्रिय है और ये सबका प्रिय। किन्तु इस आलू को सबसे प्रिय थी एक प्यारी सी, गोरी सी गोभी। जी हाँ, यह है हमारी सत्य कथा की दूसरी पात्र एक प्यारी सी, ताजगी भरी गोभी।

चलिए आइए अब आपको इस प्यारी सी गोभी से भी परिचय करवाते है। वो देखिये वो जो सामने आपको ढलान दिख रही है, जी हाँ ,वही ढलान। आइये, इससे नीचे उतरते हैं । आं–आं जरा संभल कर धीरे–धीरे, फिसलिएगा मत। अभी शाम होने को है, और सारी पहाड़ी ढलते सूरज के साथ और गहराती जा रही है। अब जो सामने आपको वो जो लकड़ी की कॉटेज दिख रही है, वहीं रहती है हमारी प्यारी सी, गोरी सी गोभी। हमारी गोभी भी इस आलू को बहुत प्रेम करती है। वह जानती है कि आलू सबका प्रिय है पर वह यह भी जानती है कि गोभी उसकी सबसे प्रिय है। प्रेम में तो बस केवल इतना अहसास ही काफी होता है पूरे जीवन के लिए।वैसे हमारा ये आलू हर मौसम में खुशनुमा, मनमौजी, घूमता फिरता और सबसे मिलता जुलता रहता था पर हमारी गोभी को गरमियाँ बिलकुल पसंद नहीं थी। पर जैसे ही ठंड पड़ती हमारी गोभी गुलाब सी खिल जाती। दूसरी तरफ हमारा आलू बहुत धैर्यवान था। वह चाहे कितना भी घूमे, फिरे मौज मस्ती मारे पर फिर भी मन ही मन गोभी का इंतजार करता और जब सर्दियाँ आ जाती तो दोनों खूब मजे करते, घूमते फिरते नाचते–गाते थे।

एक समय की बात है, गोभी के कहने पर दोनों दूर पहाड़ियो के उस पार बूढ़ी नानी से मिलने गए। रास्ता बहुत लंबा था। रास्ते में बहुत सी ऊंची–नीची पहाड़ियाँ, छोटे छोटे जंगल, नदिया और झरने पड़े। पर शाम होने तक दोनों बूढ़ी नानी के यहाँ पहुँच गए। बूढ़ी नानी दोनों को देख बहुत खुश हुई। पर हमारे आलू इतनी लंबी यात्रा के बाद कुछ थक गए। नानी बोली, पहले तुम आराम करो फिर मैं तुम्हें कुछ खिलाती हूँ। गोभी ने कहा

नानी मैं भी तुम्हारा हाथ बटाती हूँ। फिर दोनों ने मिल कर आटा गूँथा, चटनी पीसी और रायता बनाया। आलू को भूख लग आई और वह जल्दी जल्दी चटनी और रायते से रोटी खाने लगा। जब गोभी ने आलू को सिर्फ चटनी से रोटी खाते देखा तो नानी को अपना एक फूल तोड़ कर दिया और बोली 'नानी आलू की रोटी में मेरा एक फूल भी डाल दो'। आलू ने जैसे ही गोभी के फूल वाली रोटी खाई तो वह और खुश हो गया। उसको खुश देख कर हमारी प्यारी सी, गोरी सी गोभी ने नानी को अपना एक और फूल दिया और धीरे–धीरे उसने आलू को लगभग अपने सारे फूल खिला दिये।

आलू का जब पेट भर गया तो उसने देखा की गोभी ने धीरे–धीरे अपने आप को आलू पर न्योछावर कर दिया है और वह केवल एक डंढल मात्र रह गई है। आलू को तो जैसे काटो तो उसमे खून नहीं। और सच मानो, यदि आप आलू को काटेंगें तो उसमे से खून नहीं निकलेगा। इसलिए मैंने शुरुआत में ही कहा की ये एक सच्ची कहानी है। बिलकुल सच्ची। अब आलू, गोभी की दशा और उसके समर्पण को देख खूब रोया पर अब कुछ नहीं हो सकता है। तो वह बूढ़ी नानी से बोला,'नानी आप मुझे भी काट कर इस प्यारी सी गोभी के इन बचे हुए फूलों के साथ पका दो। पहले नानी ने बहुत मना किया किन्तु आलू का प्रेम भाव देख नानी ने आलू को भी काट कर बची हुई गोभी के फूलों के साथ उसकी सब्जी बनाई और खुद ही खाई। पर नानी ने देखा की सब्जी बनने के बाद भी दोनों एक दूसरे के प्रेम आलिंगन में इतने डूब गए है कि आलू अब गोभी के स्वाद का बन चुका था और गोभी आलू के ।

जानते हो, तब से ले कर अब तक चाहे आलू हर मौसम में सबसे मिलता है पर सर्दियों के मौसम में जब हमारी प्यारी सी, गोरी सी गोभी वापिस आ जाती है तो वह केवल उसके ही प्रेम में रहता है और यह प्रेम कथा आज भी हम सबके जीवन में घटित हो रही है ... निरंतर। अब मैं आप से यह नहीं कहूँगा की इस कहानी के 500 पर्चे छपवा कर पूरे शहर में बाटें, नहीं तो आपके जीवन के कुछ बुरा होगा। बिलकुल नहीं, आपके जीवन में कुछ बुरा नहीं होगा। किन्तु एक बात जरूर माने, जब भी आप आलू गोभी की सब्जी देखें या बनाए तो इसे केवल एक सब्जी न माने। अपितु इसे एक प्रेम कथा माने। एक ऐसा प्रेम जिसमें विश्वास है, समर्पण की भावना है और दो ऐसे प्रेमियों की कहानी है जो एक–दूसरे के लिए अपना जीवन तक बलिदान कर देने की हिम्मत रखते हैं ।

इसलिए अब आप का यह दायित्व है कि आप इन दोनों का प्रेम बनाए रखें और हर सर्दियों में इन्हे अपने घर लाएँ और इनके अमर प्रेम का अनुभव करें। आप इन दोनों को एक साथ ही पकाएं क्यूंकि आलू के बिना गोभी का कोई अस्तित्व नहीं है जैसे कृष्ण का राधा बिन ..... ।

●●●

जितेंद्र शर्मा
प्रशासनिक अधिकारी (ग्रेड–II)
सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया, सैक्टर–29, नोएडा

सोशल मीडिया पर फेक न्यूज: समस्या और समाधान

21वीं सदी में सूचना का सबसे सशक्त माध्यम सोशल मीडिया है। फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर, यूट्यूब और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म्स ने संवाद को लोकतांत्रिक बनाया है, लेकिन इसी से लोकतंत्र में एक गंभीर खतरा तेजी से अपने पैर पसार रहा है –फेक न्यूज। किसी भी आकार और जनसंख्या वाले देश में यह समस्या एक विकराल रूप ले सकती है और भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में फेक न्यूज का प्रभाव केवल व्यक्तिगत भ्रम तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता का कारण भी बन सकता है।

सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि **फेक न्यूज क्या है?** फेक न्यूज का तात्पर्य है –ऐसी झूठी, भ्रामक या आधी–अधूरी जानकारी जो जानबूझकर या अनजाने में फैलायी जाती है जिसका उद्देश्य निम्नलिखित इनमे से कोई भी हो सकता है:

- जनमत को प्रभावित करना
- सामाजिक तनाव उत्पन्न करना
- राजनीतिक लाभ प्राप्त करना
- आर्थिक भ्रम फैलाना
- ब्रांड या व्यक्ति की छवि को नुकसान पहुँचाना

फेक न्यूज अक्सर भावनात्मक, सनसनीखेज और त्वरित रूप से वायरल होने वाली होती है। यह टेक्स्ट, इमेज, वीडियो या मीम्स के रूप में फैल सकती है। हमारे देश में फेक न्यूज निम्न कारणों से अधिक गंभीर हो जाती है:

1. भाषाई विविधता

22 से अधिक आधिकारिक भाषाएँ और सैकड़ों बोलियाँ वाले हमारे इस देश मे एक ही खबर कई भाषाओं में अनुवादित होकर अलग–अलग अर्थ ग्रहण कर सकती है।

2. डिजिटल साक्षरता की कमी

ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में इंटरनेट का उपयोग तो बढ़ा है, लेकिन डिजिटल साक्षरता अभी भी सीमित है। लोग यह नहीं समझ पाते कि कौन–सी खबर विश्वसनीय है और कौन–सी नहीं।

3. भावनात्मक और धार्मिक संवेदनशीलता

धार्मिक, जातीय और क्षेत्रीय भावनाएँ भारत में अत्यंत गहरी हैं। फेक न्यूज इन भावनाओं को बड़ी आसानी से प्रभावित कर या भड़काकर हिंसा और तनाव उत्पन्न कर सकती है।

4. राजनीतिक ध्रुवीकरण

चुनावों के समय फेक न्यूज का उपयोग राजनीतिक दलों द्वारा विरोधी दलों को बदनाम करने के लिए किया जाता है। इससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया प्रभावित होती है। फेक न्यूज के प्रभाव को समझने के लिए हमे विगत कुछ सालों मे हुई ऐसी घटना को याद करना होगा, जैसेः

1. 2020 मे हुई पलघर मॉब लिंचिंग जिसमे व्हाट्सएप पर बच्चा चोरी की अफवाहों के कारण दो साधुओं की हत्या कर दी गई। बाद में पता चला कि खबर पूरी तरह झूठी थी।

2. "वैक्सीन से बांझपन होता है" जैसी अफवाहों ने ग्रामीण भारत में कोविड–19 वैक्सीनेशन अभियान को बाधित किया।

3. 2024 के लोकसभा चुनावों में कई फर्जी वीडियो और झूठे बयान वायरल हुए, जिससे मतदाताओं में भ्रम फैला।

4. नोटबंदी के दौरान यह खबर फैलाई कि 500 के नोट मे चिप लगी है जो ट्रैक की जा सकती है।

ऐसी खबरों का असर ये होता है कि नुकसान होने के बाद अगर कोई यह साबित कर भी दे कि ये फैक है तब भी जो नुकसान हो चुका होता है उसकी भरपाई नहीं हो पाती। ऐसी भ्रामक खबरें जंगल की आग की तरह फैलती हैं और अपना दुष्परिणाम छोड़ जाती है। ये दुष्परिणाम कई प्रकार के हो सकते हैं:

1. सामाजिक अशांति

फेक न्यूज के कारण कई बार साम्प्रदायिक दंगे, जातीय संघर्ष और क्षेत्रीय तनाव उत्पन्न हुए हैं। उदाहरणस्वरूप, 2018 में असम और महाराष्ट्र में बच्चा चोरी की अफवाहों के कारण कई निर्दोष लोगों की जान चली गई।फेक न्यूज अक्सर धार्मिक या जातीय भावनाओं को भड़काने के लिए इस्तेमाल की जाती है। उदाहरणस्वरूप, किसी समुदाय विशेष के खिलाफ झूठी खबरें फैलाकर दंगे या हिंसा की स्थिति उत्पन्न की जाती है। इससे समाज में अविश्वास और भय का माहौल बनता है. जब लोग बार–बार झूठी खबरों के शिकार होते हैं, तो वे मीडिया, सरकार और एक–दूसरे पर विश्वास खोने लगते हैं। यह सामाजिक ताने–बाने को कमजोर करता है।

2. राजनीतिक भ्रम

चुनावों के दौरान फेक न्यूज मतदाताओं को भ्रमित करती है। गलत आंकड़े, झूठे वादे और विरोधियों के खिलाफ झूठे आरोप जनमत को प्रभावित करते हैं। इससे समाज में ध्रुवीकरण और टकराव बढ़ता है।

3. स्वास्थ्य संबंधी खतरे

कोविड–19 महामारी के दौरान फेक न्यूज ने वैक्सीन के खिलाफ डर फैलाया, गलत इलाज सुझाया और लोगों को भ्रमित किया। इससे सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति को

नुकसान पहुँचा। कुछ वायरल वीडियो और मैसेज में यह कहा गया कि वैक्सीन लेने के तुरंत बाद लोगों को हार्ट अटैक आ रहा है। आइ सी एम आर और एम्स के अध्ययन ने स्पष्ट किया कि वैक्सीन और अचानक मौतों के बीच कोई सीधा संबंध नहीं है। जब संक्रमण दर कम हुई, तब यह प्रचारित किया गया कि अब वैक्सीनेशन की आवश्यकता नहीं है। इससे दूसरी लहर में तैयारियों में कमी आई। इससे लोगों मे डर फैला, लोग वैक्सीन लेने से डरने लगे, जिससे टीकाकरण अभियान धीमा पड़ा। अफवाहों के कारण अस्पतालों में अनावश्यक भीड़ और गलत इलाज की मांग बढ़ी और स्वास्थ्य प्रणाली पर दबाव बढ़ा। इससे सामाजिक अविश्वास हुआ और सरकार, डॉक्टरों और वैज्ञानिकों पर विश्वास कम हुआ, जिससे नीति निर्माण में बाधा आई।

4. आर्थिक नुकसान

फेक न्यूज केवल सामाजिक या राजनीतिक समस्या नहीं है, बल्कि यह भारत की अर्थव्यवस्था को भी गंभीर रूप से प्रभावित करती है। झूठी खबरों के कारण निवेशकों में भ्रम और भय उत्पन्न होता है, जिससे शेयर बाजार में अस्थिरता बढ़ती है। उदाहरणस्वरूप, किसी कंपनी के दिवालिया होने की अफवाह से उसके शेयरों की कीमत गिर सकती है। फेक न्यूज के कारण ब्रांड की प्रतिष्ठा को नुकसान और उपभोक्ता विश्वास में गिरावट देखी गई है।

फेक न्यूज से आपूर्ति श्रृंखला भी बाधित होती है। उदाहरण के लिए, प्रवासी मजदूरों पर हमले की अफवाहों ने निर्माण और उत्पादन क्षेत्रों में श्रमिकों की उपलब्धता को प्रभावित किया। इससे उत्पादन लागत बढ़ी और समयसीमा में देरी हुई फेक न्यूज साधारण तौर पर निम्नलिखित मे से किसी भी माध्यम से फैलती है:

1. व्हाट्सएप फॉरवर्ड्स

आज व्हाट्सएप भारत का सबसे लोकप्रिय मैसेजिंग प्लेटफॉर्म बन चुका है, जिसके 20 करोड़ से अधिक सक्रिय उपयोगकर्ता हैं। इसकी सहजता, गोपनीयता और तेजी से संदेश भेजने की क्षमता ने इसे संवाद का प्रमुख माध्यम बना दिया है। लेकिन इसी ताकत ने इसे फेक न्यूज फैलाने का सबसे प्रभावशाली जरिया भी बना दिया है। व्हाट्सएप पर संदेशों को एक क्लिक में कई लोगों तक भेजा जा सकता है। ग्रुप्स और ब्रॉडकास्ट लिस्ट्स के माध्यम से एक झूठी खबर लाखों लोगों तक मिनटों में पहुँच जाती है। चूंकि व्हाट्सएप एंड–टू–एंड एन्क्रिप्टेड है, इसलिए यह पता लगाना मुश्किल होता है कि फेक न्यूज की शुरुआत कहाँ से हुई। ग्रुप्स में बिना सत्यापन के मैसेज फॉरवर्ड किए जाते हैं। व्हाट्सएप पर आने वाली खबरें अक्सर भावनात्मक होती हैं –धार्मिक, जातीय या राष्ट्रवादी भावनाओं को उकसाने वाली। लोग बिना सत्यापन के इन्हें आगे बढ़ा देते हैं, क्योंकि वे अपने करीबी लोगों से प्राप्त होती हैं, जिससे भरोसा स्वतः बन जाता है।

2. यूट्यूब और फेसबुक वीडियो

वीडियो कंटेंट अधिक प्रभावशाली होता है। कई यूट्यूब चैनल और फेसबुक पेज सनसनीखेज और झूठी खबरें फैलाते हैं और कहीं की घटना को कहीं की बता कर वायरल कर देते हैं।

3. ट्विटर ट्रेंड्स

ट्विटर एक माइक्रो–ब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म है जो भारत में राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक विमर्श का एक प्रभावशाली माध्यम है। इसकी रीयल–टाइम प्रकृति, हैशटैग ट्रेंड्स और वायरलिटी की क्षमता ने इसे सूचना प्रसार का शक्तिशाली उपकरण बना दिया है। ट्विटर पर किसी झूठी खबर को ट्रेंडिंग हैशटैग के साथ जोड़कर उसे विश्वसनीयता दी जाती है। एक बार ट्रेंड में आने के बाद वह खबर लाखों लोगों तक पहुँच जाती है। हैशटैग और ट्रेंड्स के माध्यम से झूठी खबरें वायरल की जाती हैं। कई राजनीतिक या वैचारिक समूह फेक अकाउंट्स और बॉट्स का उपयोग करते हैं ताकि एक ही खबर को बार–बार पोस्ट कर उसे "जनमत" का रूप दिया जा सके। पुराने या संदर्भ से बाहर की गई तस्वीरें और वीडियो को नए घटना क्रम से जोड़कर भ्रम फैलाया जाता है। उदाहरणस्वरूप, किसी दंगे की पुरानी तस्वीर को वर्तमान घटना से जोड़कर तनाव फैलाया जाता है।

4. डीपफेक टेक्नोलॉजी

अब AI आधारित डीपफेक वीडियो भी फेक न्यूज का हिस्सा बन चुके हैं, जिससे किसी व्यक्ति के बयान या हरकत को झूठे रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। "डीपफेक" शब्द" डीप लर्निंग" और "फेक" का मिश्रण है, जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग का उपयोग कर किसी व्यक्ति की आवाज, चेहरा और हाव–भाव को इतनी बारीकी से कॉपी किया जाता है कि असली और नकली में फर्क करना मुश्किल हो जाता है।

IIT जोधपुर की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में हर महीने लगभग 3,000 से अधिक डीपफेक वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित होते हैं, जिनमें से 60: का उद्देश्य किसी को बदनाम करना या भड़काना होता है। यह तकनीक अब केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रही, बल्कि पत्रकारिता, राजनीति और सामाजिक संवाद को भी प्रभावित कर रही है।

फेक न्यूज की समाधान केवल एक स्तर से संभव नहीं है इसके लिए बहु–स्तरीय रणनीति की जरूरत है जो नीचे दिए गए माध्यमों से संभव है:

1. सामाजिक उत्तरदायित्व

- **नागरिकों की भूमिका:** सबसे पहले और सबसे ऊपर हर नागरिक की ये जिम्मेदारी होनी चाहिए की वो किसी भी खबर की विश्वसनीयता सुनिश्चित करे। बिना यह सुनिश्चित किए न तो वह कोई धारण बनाए न ही ऐसी कोई जानकारी आगे सोशल मीडिया के माध्यम साझा करे।
- **प्रभावशाली व्यक्तियों की जिम्मेदारी:** समाज के प्रभावशाली व्यक्तियों जैसे पत्रकार, शिक्षक, नेता और सेलिब्रिटी को जिम्मेदारी से व्यवहार करना चाहिए और ऐसे समाचारों को एन्डॉर्स नहीं करना चाहिए।

2. शिक्षा और जागरूकता

- **डिजिटल साक्षरता अभियानः** स्कूलों, कॉलेजों और पंचायत स्तर पर डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दिया जाए। बच्चों को भी इसके बारे मे विस्तार से बताया जाए क्योंकि सूचना के इस दौर मे जब जानकारी आपसे एक क्लिक की दूरी पर है सही खबरों को जानना बहुत जरूरी है। हमारी आने वाली पीढ़ियों को यह समझना होगा और जिम्मेदारी उठानी होगी।
- **मीडिया साक्षरताः** लोगों को सिखाया जाए कि कैसे खबरों की स्रोत, तिथि और संदर्भ की जांच करें।

3. नीतिगत हस्तक्षेप

इन सब के साथ सरकारों और सरकारी तंत्रों को भी आगे आना होगा और ऐसे कुछ कदम उठाने होंगेः

- **आईटी अधिनियम में संशोधनः** सरकार को फेक न्यूज फैलाने वालों के खिलाफ सख्त दंडात्मक प्रावधान लागू करने चाहिए।
- **फैक्ट–चेकिंग यूनिट्सः** फैक्ट चेकिंग के लिए सरकारी इकाइयों को और सशक्त बनाना चाहिए।
- **चुनाव आयोग की भूमिकाः** चुनावों के दौरान फेक न्यूज पर निगरानी रखने के लिए विशेष सेल गठित किए जाएँ।

4. तकनीकी समाधान

- **AI आधारित मॉडरेशनः** सोशल मीडिया कंपनियाँ AI का उपयोग कर फेक न्यूज की पहचान और रोकथाम करें।
- **फेक न्यूज डिटेक्शन टूल्सः** उपयोगकर्ताओं को ऐसे टूल्स उपलब्ध कराए जाएँ जिससे वे खबर की सत्यता जांच सकें।

निष्कषः

फेक न्यूज आज केवल एक सूचना विकृति नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिरता के लिए एक गंभीर खतरा बन चुकी है। भारत जैसे विविधतापूर्ण और भावनात्मक रूप से संवेदनशील देश में इसका प्रभाव कई गुना अधिक होता है। एक झूठी खबर न केवल जनमत को भ्रमित करती है, बल्कि सामाजिक सौहार्द को भी नुकसान पहुँचा सकती है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे व्हाट्सएप, ट्विटर और यूट्यूब ने संवाद को लोकतांत्रिक तो बनाया है, लेकिन बिना सत्यापन के वायरल होती खबरों ने सूचना के विश्वसनीयता को चुनौती दी है। बच्चा चोरी, धार्मिक तनाव, चुनावी दुष्प्रचार और वैक्सीनेशन से जुड़ी अफवाहों ने यह सिद्ध कर दिया है कि फेक न्यूज केवल एक

डिजिटल समस्या नहीं, बल्कि एक सामाजिक संकट है।इस चुनौती से निपटने के लिए बहु–स्तरीय समाधान आवश्यक है। सरकार को सख्त साइबर कानून और तथ्य–जांच तंत्र को सशक्त बनाना होगा। सोशल मीडिया कंपनियों को अपने एल्गोरिदम में सुधार कर फेक न्यूज की पहचान और रोकथाम करनी चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण, नागरिकों को डिजिटल साक्षरता और मीडिया विवेक से लैस करना होगा ताकि वे हर खबर को सोच–समझकर साझा करें।

फेक न्यूज से लड़ना केवल तकनीकी युद्ध नहीं, बल्कि एक नैतिक और सामाजिक आंदोलन है। जब नीति, तकनीक और जन–जागरूकता एक साथ आगे बढ़ेंगी, तभी हम एक ऐसा सूचना–पर्यावरण बना पाएंगे जो सत्य, विवेक और जिम्मेदारी पर आधारित हो। सोशल मीडिया की शक्ति को सकारात्मक दिशा में मोड़ना ही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इस विशाल देश के सारे हिस्सेदारों यानी सरकार, तकनीकी कंपनियाँ, मीडिया संस्थान और नागरिकों को मिलकर काम करना होगा। जब हर नागरिक जागरूक होगा, तभी फेक न्यूज की जड़ें कमजोर होंगी और देश सशक्त होगा।

•••

अभिषेक श्रीवास्तव
संयुक्त निदेशक
तेल उद्योग सुरक्षा निदेशालय

उड़ान

दिव्यांगता मेरा बंधन नहीं मेरी उड़ान है

सीमाओं में भी अपना आसमान है

टेढ़े रास्ते हो या काँटों भरे बाग

मैंने सीख है हर मुस्कान के पीछे का त्याग

ना हारता हूँ, ना हारूँगा कभी

मेरी आँखों में है भविष्य का रवि

लोग कहते हैं असमर्थ हो तुम

पर मेरी आत्मा बोली असंभव नहीं तुम

दिव्यांगता सिर्फ एक शब्द है ना कोई दीवार

मेरा सपना मेरा जुनून है मेरी असली पहचान

दिव्यांग नहीं, सक्षम हूँ मैं

बाधाओं से ऊपर उठने वाला प्राण हूँ मैं

सुनो ! यह मेरा युग है, मेरी कहानी

मेरी कठिनाइयों में भी बासी एक जवानी

मैं चट्टान हूँ , मैं सागर हूँ, मैं अनंत हूँ

दिव्यांगता मेरा परिचय नहीं मेरी शक्ति का एक रंग है

दिव्यांगता मेरा बंधन नहीं मेरी उड़ान है

•••

डॉ. ध्रुव कुमार
प्रवक्ता
राष्ट्रीय बौद्धिक दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान
नोएडा

नराकास (कार्यालय) नोएडा के तत्वाधान में वी.वी.गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान नोएडा के सौजन्य से दिनांक 19.12.2025 को टिप्पण आलेखन (नोटिंग ड्राफ्टिंग) प्रतियोगिता का आयोजन

जानती हूँ भीग जाऊँगी

जानती हूँ भीग जाऊँगी कागज की हूँ मैं

नहीं संभाल पाऊँगी

बिखर गई तो बह गई तो

हाथ भी दोगे तो टूट जाऊँगी मैं

कुछ बूंदें बारिश की जो दिख रही हैं

बस दूर से ही

इस खिड़की के शीशों के उस पार

बुला रही हो जैसे तू बनी ही थी इन बूंदों के लिए

क्यूँ किसी किताब पे बैठी है गुमसुम बाहर निकाल

यह बूंदें ही ले जाएंगी तुझे तेरी मंजिल की ओर

बह जाने दे खुद को

निखर जाने दे खुद को

मुस्कुरा के बंद कर ली आँखें मैंने कुछ देर

कुछ हौसला और बढ़ा लूँ मैं तब तक

जानती हूँ भीग जाऊँगी कागज की हूँ मैं

●●●

डॉ. रश्मि श्रीवास्तव
वैज्ञानिक
राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा

कभी–कभी मुस्कुरा लिया करता हूँ

कभी कभी मुस्कुरा लिया करता हूँ
उलझने है बहुत, सुलझा लिया करता हूँ मैं
कभी कभी मुस्कुरा लिया करता हूँ
जिंदगी है अजब माया
कहीं धूप कहीं छाया
क्या खोया क्या पाया
ऐसे सवालातों पर अक्सर मुस्कुरा लिया करता हूँ
जब अपनों ने मुझे, गैरों सा जताया
उनके इस बेपाक रवैये पर, मुस्कुरा लिया करता हूँ
क्यों नुमाइश लगाऊँ मैं अपने माथे के शिकन की
मैं अक्सर मुस्कुरा कर इन्हें मिटा लिया करता हूँ
जी हाँ मैं अक्सर मुस्कुरा कर इन्हें मिटा लिया करता हूँ
जब लड़ना है खुद को खुद से ही
तो अपनी हर जीत को सलाम, और हर हार पर मुस्कुरा लिया करता हूँ
जी हाँ हर हार पर मुस्कुरा लिया करता हूँ
समझ गया हूँ चंद फासले जरूरी है हर रिश्ते में –
हर लगाव से मिला है घाव
मिले इस घाव पर मुस्कुरा लिया करता हूँ
मेरी मुस्कान मुझे हौसला देती है करोड़ों का
फिर भी अगर, आँखें भर आयी तो मुस्कुरा लिया करता हूँ
जिंदगी में ठोकरें खायी है बहुत
जब भी गिरा, उठकर बढ़ा फिर भी नए हादसे हो जाए, तो मुस्कुरा लिया करता हूँ
दोस्तों जिंदगी में धूप, छाँव, लगाव और घाव मिलते है रोज
कहीं और मत करो इनकी खोज
तुम्हारी मुस्कुराहट जो तुम्हारे पास है
वो ही तुम्हारा विश्वास है
वो ही तुम में खास है
उसी में सच्चे सुख और सुकून की भरमार है
इसी मै सुख शांति का वास है
ये मुस्कुराहट भी एक राज है
जी हाँ मुस्कुराहट भी एक राज है

●●●

प्रदीप सक्सेना
अनुभाग अधिकारी
भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण
नोएडा

भारतीय शिक्षा में कला का महत्व

भारतीय कला अपने कला के साथ भारत की संस्कृति ,भारतीय परंपरा और यहा की लोक कला जैसे बहोत सारे विषयो का संयोजन है , भारतीय कला न केवल समाज को बढ़ाने ,शिक्षा को आगे लेके जाने बल्कि समाज में होने वाली सभी घटनाओ का दर्पण बनकर सामने आती है ,और कला को एक अलग स्थान प्रदान करती है। कला केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि सामाजिक जीवन में सुधार करने मानव को अपनी संस्कृति सभ्यता से जोड़ने वाली है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में कला का स्थान महत्वपूर्ण है। भारतीय शिक्षा प्रणाली प्रगेतिहासिक काल से आगे चलकर जब मानव विकास के चरमोत्कर्ष पे था तो शिक्षा भी अपने उत्थान पर पहुँच गयी पर इस शिक्षा की शुरूआत ही हमें कला के माध्यम से देखने को मिलती है जहां शिक्षा को कला के माध्यम से आगे ले जाया गया साथ ही लोगो के हुनर ,पहचान उनकी ज्ञान का परिचय भी उनके कला कुशलता से ही पता चलता है। भारतीय शिक्षा परंपरा में कला का स्थान अत्यंत विशिष्ट रहा है। यह केवल सौंदर्य–बोध या मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि मानव जीवन के समग्र विकास की आधारशिला है। प्राचीन काल में कला ने मनुष्य के जीवन को आकार दिया – चाहे वह चित्रण के रूप में संदेश और जीवन की अभिव्यक्ति हो या वेदों और उपनिषदों में संगीत व छंदों के माध्यम से शिक्षण की परंपरा। आज की शिक्षा प्रणाली में भी कला विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, संवेदनशीलता और सांस्कृतिक चेतना को विकसित करने का प्रमुख साधन है।

–रेखांकन कला, चित्रकला एवं स्थापत्य कला का उदाहरण

कला और भारतीय शिक्षा की नींवः भारतीय शिक्षण परंपरा में "विद्या" का अर्थ केवल ज्ञान प्राप्ति नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला था। कला के माध्यम से जीवन व्यापन करना प्रगेतिहासिक काल से ही चला रहा है। लोग अपनी कला के माध्यम से अपनी जरूरत की सामग्री लेके अपनी कलाकृति को देते थे। मोहनजोदड़ों के समय से ही यह देखने को मिलता है। आरंभ में ही प्रतीक चिन्ह बनाकर , मोहर बनाकर कला को मानव की बुद्धिमता प्रस्तुत करने का माध्यम बना दिया और यह भी कहा जा सकता है की कला शिक्षा का साधन बनने लगी। प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में संगीत, नृत्य, चित्रकला, धनुर्विद्या, साहित्य, और वास्तुकला को समान रूप से महत्व दिया जाता था। कला क्षेत्र में ललित कला का विस्तृत रूप देखने को मिलता है और कला के हर क्षेत्र को बढ़ावा मिला गुरुकुल में केवल शिक्षा ही नहीं स्थापत्य कला का विस्तार, मूर्तिकला का व्यापक रूप, चित्रकला तो हर जगह उपस्थित होने लगी कहीं प्रतीक के माध्यम से कहीं रंगो के माध्यम से कलाकृति के रूप में , संगीत क्षेत्र की शिक्षा सभी शिक्षा एक ही स्थान पर मिलने लगी ।

भरतमुनि के नाट्य शास्त्र में कहा गया –

"नाट्यं भगवता सृष्टं लोकशिक्षार्थमेव हि।"

अर्थात् कला लोकशिक्षा और लोकमंगल के लिए उत्पन्न की गई। भारत मुनि की नाट्य कला सभी क्षेत्रो को एक साथ लिए एक ही मंच पर उपस्थित होकर कला का संयोजन एवं शिक्षा प्रदान करती है।

मध्यकाल से आधुनिक युग तक कला का विकासः

मध्यकाल में कला दरबारी संरक्षण में फली–फूली और धीरे–धीरे लोक जीवन में समाहित हुई। मुगलकालीन स्थापत्य, लघुचित्र, संगीत और शिल्प कला ने भारतीय शिक्षा में सौंदर्य–बोध और तकनीकी ज्ञान का समावेश किया। भारत में मध्यकाल के समय से मुगल दरबार में सबसे ज्यादा दरबारी कला का उत्थान हुआ कला दरबार के अंदर एवं राजशाही रह गयी थी। कला का कार्य केवल दरबार में रहने वाले राजशाही लोगो के लिए चाहे वो चित्रकल हो या संगीत कला सिर्फ दरबार में राजा को प्रसन्न करने के लिए रह गयी थी । बीडी में धीरे–धीरे जहाँगीर कल में कला राजशाही से दरबारी कला से निकलकर समाज के लिए और सामान्य जन के लिए हुई । और जब कला सामाजिक होती है तो शिक्षा से जुड़ती है सामाजिक जीवन में सुधार लाने जीवन व्यापन करने का साधन बन जाती है।

औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी शिक्षा नीति ने कला शिक्षा को हाशिये पर पहुँचा दिया, परंतु स्वतंत्रता के बाद डॉ. राधाकृष्णन आयोग (1948–49) और कोठारी आयोग (1964–66)ने कला को शिक्षा का अभिन्न अंग घोषित किया।

नई शिक्षा नीति(NEP 2020) ने इसे और सुदृढ़ किया कृ"कला–संवर्धित शिक्षण छात्रों को रचनात्मक सोच, समस्या समाधान और सांस्कृतिक पहचान से जोड़ता है।"

भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण में कलाः

भारतीय दर्शन के अनुसार, कला और शिक्षा दोनों आत्म–साक्षात्कार की साधना हैं। वेदांत दर्शन में सृष्टि को 'ब्रह्म की लीला' कहा गया है – अतः कला उसी सृजनात्मक ऊर्जा का प्रतिबिंब है। साथ ही साथ कला को समाज एवं सामाजिक यथार्थ का प्रतिबनिम्ब भी कहा गया है। कला समाज में घटित सभी दृश्यो को कला के माध्यम से समाज के सामने रखने का कार्य करती है ।

योग दर्शन के अनुसार, कलाकार जब अपने कार्य में तल्लीन होता है, तो वह ध्यान और समाधि की अवस्था को प्राप्त करता है। इस प्रकार कला स्वयं एक आध्यात्मिक साधना बन जाती है। मानव जीवन को आधायात्म से जोड़ने का कार्य कला निरंतर करती आयी है। योग शिक्षा में कला को निहित कर कला की आध्यात्मिक प्रविति को भी दर्शाती है। बुद्ध, जैन, हिन्दू सभी धर्म के आध्यात्मिक चिन्ह, प्रतीकों को भी कला के माध्यम से प्रस्तुत करना एवं आध्यात्मिक से जोड़ना कला के माध्यम से ही संभव हो पाया है।

भारतीय चिंतन में ज्ञान → अनुभूति → अभिव्यक्ति – यह त्रिक शिक्षा का मूल स्वरूप है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने शिक्षा और कला के समन्वय को "मानवता का सर्वोच्च रूप" कहा, जबकि महात्मा गांधी ने नई तालीम में कला और श्रम को समान महत्व दिया।

कला शिक्षा का मनोवैज्ञानिक और सामाजिक महत्वः

कला व्यक्ति के भीतर सृजनात्मकता, आत्म–अभिव्यक्ति और आत्म–संतोष की भावना विकसित करती है। कला के माध्यम से मानव संतोष , आनंद और सृजन कारण आसानी से कर पता है नए निर्माण का नींव रखना नए रूपाकार करना कला के माध्यम से संम्भव है।

हावर्ड गार्डनर के Multiple Intelligences Theory के अनुसार – कला शिक्षा दृश्य–स्थानिक, संगीतिक और गतिक बुद्धिमत्ताओं को सक्रिय करती है।

विद्यालयों में कला के समावेश से विद्यार्थी न केवल कल्पनाशील बनते हैं, बल्कि टीमवर्क, सहानुभूति और सांस्कृतिक मूल्यों को भी सीखते हैं।कला के शिक्षा ग्रहण करने में समूह मे कार्य करना शिक्षा का एक अलग अंग भी प्रस्तुत करता है साथ ही कला का शिक्षा में महत्व भी बताता है। कला के माध्यम से ही कक्षा में शिक्षक अपनी कक्षा में शिक्षा को आसान एवं मनोरंजक बना पता है।

आधुनिक शिक्षा में कला की आवश्यकताः

आज तकनीकी युग में मानसिक तनाव, प्रतिस्पर्धा और असंवेदनशीलता बढ़ रही है। ऐसे में कला शिक्षा व्यक्ति में संतुलन, करुणा और रचनात्मक दृष्टि का विकास करती है। कला होने एवं मानव जीवन में कला के होने से कला केवल चित्रकला या संगीत तक सीमित नहीं रही – यह डिजाइन, फैशन, डिजिटल आर्ट, आभूषण, हस्तशिल्प और क्राफ्ट जैसे आधुनिक क्षेत्रों में भी नवाचार का आधार बन गई है। नए नए कला क्षेत्र का विकास प्रतिदिन बनने वाली नयी

कलाकृति देश में बढ़ते कला का विकास स्थापत्य से लेके चित्रकला तक हर जगह प्रदर्शित हो रहे है। आधुनिकता के समय में कला अपने चरम स्तर पर भी है, हर कलाकार नए आयाम का प्रयोग कर शिक्षा के साथ नए कला के रूप को प्रस्तुत कर रहा है। मानसिक तनाव से मुक्त हो रहा है, प्रतिस्पर्धा के समय में मानव खुद इसके बाहर रखकर कला को महसूस कर रहा है।

निष्कर्ष: भारतीय शिक्षा में कला का महत्व केवल विषयगत नहीं, बल्कि अस्तित्वगत है। कला शिक्षा व्यक्ति को संवेदनशील, सृजनशील और मानवीय बनाती है। कला केवल नया सीखने या न बनाने तक माध्यम ही नहीं रह गयी बल्कि कला सामाजिक सुधार , समाज के लिये उनके जीवन का एक प्रमुख अंग बन गई है।

जब शिक्षा में कला का समावेश होता है, तब ज्ञान केवल सूचना नहीं, बल्कि अनुभूति और सृजन में बदल जाता है। इसलिए आवश्यक है कि –

1. हर स्तर पर कला शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाए।
2. शिक्षकों को कला–संवर्धित शिक्षण का प्रशिक्षण मिले।
3. कला को "शिक्षा की आत्मा" के रूप में देखा जाए।

भारतीय शिक्षा तभी पूर्ण कहलाएगी जब उसमें **कला, विज्ञान और मानवता का संतुलित समन्वय** होगा – यही भारतीय दर्शन की आत्मा है।

•••

सौरभ श्रीवास्तव
फैशन डिजाइन विभाग
फुटवियर डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट,नोएडा

इंसान फिर बने इंसान

लहू से बना इंसान, फिर क्यों बना हैवान,
किसी माँ का गया लाल, बिखर गया अरमान।
धर्म के नाम पे बहा लहू बेइंतिहा,
कहाँ खो गया इंसान, ये कैसी सजा?
नफरत की आग में जलते हैं गाँव,
शहरों की गलियों में बिखरे हैं पाँव।
शर्मसार हो गया आज इंसानियत का नाम,
हर जुबां पे खामोशी, हर दिल पे इल्जाम।
कब होगा आतंकवाद का खात्मा,
कब होगा धर्म के नाम में सबका सामना?
कभी तो वो सुबह आएगी,
जब इंसान फिर बनेगा इंसान – सच्चाई से जग जाएगी।
हिंदू होना क्या जुर्म है आज अपने देश में?
अपनी मिट्टी से मोहब्बत क्यों लगती है एतराज में?
कहाँ गई वो बातें, वो दिलों की चाहतें?
क्यों बन गईं रगों में नफरत की राहतें?
बंटती है रोटी भी अब मजहब के नाम पर,
बिकता है इंसान भी सियासत के बाजार पर।
कब जागेगा मन, कब टूटेगा गुमान?
कब मुस्कुराएगा फिर हर एक इंसान?
जिनसे थी उम्मीदें, वो भी चुप हैं आजकल,
हर कोना है बेजान, हर चेहरा है विकल।
क्या यही है जीवन? क्या यही है संसार?
जहाँ डर है हर साँस में, और आँखों में अंगार?
चलो फिर एक दिया जलाएं,
नफरतों को राख कर, मोहब्बत से घर सजाएँ।
कोई तो आगे बढ़े, बोले सच्चाई की जुबान,
क्योंकि जरूरी है अब –
बन जाए इंसान, फिर से इंसान।

●●●

अनूप सिंह राणा
वरिष्ठ संकाय
फुटवियर डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट, नोएडा

धुआं रहित तंबाकू के विज्ञापनों का खतरनाक खेल: युवाओं के भविष्य से खिलवाड

आज के आधुनिक समाज में जब हम स्वास्थ्य और जागरूकता की बात करते हैं, तो एक गंभीर समस्या हमारे सामने खड़ी हो जाती है: धुआं रहित तंबाकू के भ्रामक और धोखेबाज विज्ञापन। यह विज्ञापन न केवल युवाओं को भ्रमित कर रहे हैं, बल्कि उनके स्वास्थ्य और जीवन को खतरे में डाल रहे हैं। दुनिया में 70 से अधिक देशों में 3 करोड़ 50 लाख से अधिक लोग धुआं रहित तंबाकू का सेवन करते है। भारत इसका एक प्रमुख उपभोक्ता और उत्पादक देश है। धुआं रहित तंबाकू उत्पादों के 20 करोड़ से अधिक वयस्क उपयोगकर्ता हैं और धुआं रहित तंबाकू के कारण होने वाली मौतों में भारत का योगदान लगभग 80% है। धुआं रहित तंबाकू उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए तम्बाकू उद्योग प्रतिवर्ष पांच अरब डॉलर खर्च करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुच्छेद 13 के कानून के अनुसार तंबाकू नियंत्रण पर अधिनियम, 2003, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से तम्बाकू उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबंधित करता है।

सरोगेट विज्ञापन का जाल और उसकी चालाकी

तंबाकू उद्योग अपने उत्पादों का प्रचार करने के लिए नये–नये तरीके खोज रहा है। इनमें सबसे प्रमुख हैं 'सरोगेट' या 'प्रतीकात्मक' विज्ञापन, जिनमें तंबाकू से संबंधित उत्पादों को सामान्य वस्तुओं जैसे माउथ फ्रेशनर, हर्बल च्युंगम या अन्य आकर्षक उत्पादों के रूप में दिखाया जाता है। ये विज्ञापन देखने में आकर्षक लगते हैं, परंतु इनका उद्देश्य युवाओं और बच्चों के बीच तंबाकू के सेवन को सामान्य बनाना है।

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद विश्व कप, 2023 के दौरान धुआँ रहित तम्बाकू उत्पादों के प्रमुख सरोगेट विज्ञापन

खेलों और मीडिया का दुरुपयोग

विशेष रूप से क्रिकेट जैसे लोकप्रिय खेलों का उपयोग तंबाकू कंपनियां अपने उत्पादों का प्रचार करने के लिए कर रही हैं। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद क्रिकेट विश्व कप 2023 जैसे

बड़े आयोजन में, टीवी पर मैच के दौरान इन भ्रामक विज्ञापनों को दिखाना, तंबाकू उद्योग का एक सुनियोजित प्रयास है। इन विज्ञापनों के माध्यम से वे लाखों दर्शकों, विशेष रूप से युवा पीढ़ी को प्रभावित कर रहे हैं।

कानूनी प्रतिबंधों का उल्लंघन और उद्योग का दुरुपयोग

विनियमित तंबाकू विज्ञापन पर कार्रवाई के बावजूद, उद्योग अपने प्रचार के तरीके बदल कर इन प्रतिबंधों को तोड़ रहा है। भारत सहित कई देशों में तंबाकू विज्ञापनों पर कानून तो हैं, पर उनका सही से पालन नहीं हो रहा। इससे पता चलता है कि तंबाकू उद्योग किस तरह से कानून का उल्लंघन कर अपने उत्पादों का प्रचार कर रहा है।

स्वास्थ्य संबंधी गंभीर खतरे

धुआं रहित तंबाकू का सेवन कैंसर, हृदय रोग और अन्य गंभीर बीमारियों का कारण बनता है। इन भ्रामक विज्ञापनों के कारण युवाओं का स्वास्थ्य खतरे में पड़ रहा है, जिससे समाज में कैंसर और हार्ट अटैक जैसे रोगों की संख्या बढ़ रही है। यह न केवल व्यक्तिगत जीवन के लिए हानिकारक है, बल्कि परिवार, समाज और देश के समग्र स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर रहा है।

समाधान और आवश्यक कदम

- सरकार को चाहिए कि तंबाकू और उससे जुड़े भ्रामक विज्ञापनों पर सख्ती से निगरानी रखे और इन पर तुरंत प्रतिबंध लगाए।
- मीडिया और स्कूलों के माध्यम से जनता में जागरूकता अभियान चलाए जाएं, ताकि

लोग इन भ्रामक विज्ञापनों की वास्तविकता को समझ सकें।

- कानून का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाए।
- तंबाकू नियंत्रण के लिए सामाजिक और स्वास्थ्य संगठनों को सक्रिय कर, युवा वर्ग को इन खतरनाक उत्पादों से दूर रखने के लिए प्रयास किए जाएं।

निष्कर्ष:

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट टूर्नामेंटों के माध्यम से धुआं रहित तम्बाकू (एसएलटी) उत्पादों का भ्रामक विज्ञापन तम्बाकू उद्योग को एफसीटीसी अनुच्छेद 13 का उल्लंघन करते हुए वैश्विक बाजारों में अपने उत्पादों को बढ़ावा देने में मदद करता है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट और अन्य खेल बोर्डों को सभी खेलों में तंबाकू उत्पादों के किसी भी प्रकार के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष ब्रांड एसोसिएशन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने पर विचार करना चाहिए। यह समय है कि हम मिलकर धुआं रहित तंबाकू के इन भ्रामक और खतरनाक प्रचारों को रोकें। युवाओं का भविष्य सुरक्षित करने के लिए आवश्यक है कि हम अपने कानूनों का सही से पालन कराएं और जागरूकता के माध्यम से इन जालसाजी भरे विज्ञापनों का मुकाबला करें। स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है, और इसे बचाना हम सब का कर्तव्य है।

प्रकाशित शोध पत्र लिंक :

https://tobaccocontrol-bmj-com/content/early/2024/05/28/tc&2024&058632

•••

चंद्रेश प्रज्ञा वर्मा
तकनीकी अधिकारी सी
आई सी एम आर – राष्ट्रीय कैंसर रोकथाम एवं अनुसंधान संस्थान, नोएडा

डॉ. प्रशांत कुमार सिंह
वैज्ञानिक ई एवं एसोसिएट प्रोफेसर
आई सी एम आर – राष्ट्रीय कैंसर
(कैंसर रोकथाम एवं जनसंख्या स्वास्थ्य विभाग)
रोकथाम एवं अनुसंधान संस्थान, नोएडा

याद आता है मेरा घर

लहू के थे जो रिश्ते उन्हें छोड़ कर आ गए हैं,
सुकून आंखों के सामने खड़ा था मुंह मोड़ कर आ गए,
और खजाने लुट रहे थे मां बाप के जमाने में,
जिम्मेदारी थी कुछ, सो घर छोड़ कर आ गए हैं।

जिम्मेदारी और ख्वाबों के बीच में उलझ के रह गए हैं और छूट गया है मेरा घर
कैसे उजाले आंखो पे छाले हैं, और कितना है शोर सा
कैसे से सपने हैं छूटे सब अपने हैं,सपना भी है चोर सा
चार लोग चारों बिखरे हैं, अब सूना सा रहता है मेरा घर
उड़ने की चाहत थी आजादी भी भाती थी, अब हैं आजाद तो याद आता है मेरा घर

ऐसा ठगा हूं पता भी नहीं ठगा भी गया के नहीं है
मुझको पाना ये सारा जमाना, चुकानी है कीमत मगर मेरा घर
थी मुझको जब भी जरूरत कभी, तब साथ मेरे था मेरा घर
है अब उनको मेरी जरूरत, तो बुला लेता है ये शहर
वही घोंसला है वही गांव डाली जहां पर अकेले हैं मां

मंजिल जो बदले खुदा अपना मकसद तो मोडू मैं अपना सफर
और जाऊं मेरे घर, मैने हर घर में अपना घर ढूंढा है
मेरा घर अब मुझको कहां मिलेगा, हर कोने में सिमटी हैं यादें
अब घर जब भी जाते हैं मेहमान बनकर जाते हैं
मेरे हक का घर, अब मुझको कहां मिलेगा

•••

सुश्री जाह्नवी
तकनीकी सहायक(पोषण)
आई सी एम आर–राष्ट्रीय कैंसर रोकथाम एवं अनुसंधान संस्थान
सेक्टर –39, नोएडा–201301, भारत

देख तमाशा लकड़ी का

जीते भी लकड़ी मरते भी लकड़ी, देख तमाशा लकड़ी का
क्या जीवन क्या मरण कबीरा, खेल रचाया लकड़ी का,

जिसमे तेरा जनम हुआ, वो पलंग बना था लकड़ी का,
माता तुम्हारी लोरी गाए, वो पलना था लकड़ी का,
पड़ने चला जब पाठशाला में, लेखन पाठी लकड़ी का
गुरु ने जब जब डर दिखलाया, वो डंडा था लकड़ी का,
जिसमे तेरा ब्याह रचाया, वो मंडप था लकड़ी का,
जिसपे तेरी शैय्या सजाई, वो पलंग था लकड़ी का,
डोली पालकी और जनाजा, सबकुछ है ये लकड़ी का
जनम–मरण के इस मेले में है सहारा लकड़ी का

उड़ गया पंछी रह गई काया, बिस्तर बिछाया तकड़ी का,
एक पलक में खाक बनाया, ढेर था सारा लकड़ी,
मरते दम तक मिटा नहीं भैया, झगड़ा झगड़ी लकड़ी का
राम नाम की रट लगाओ तो, मिट जाए झगड़ा लकड़ी का,
क्या राजा क्या रंक मनुष संत, अंत सहारा लकड़ी का
कहत कबीरा सुन भई साधु ले ले तम्बूरा लकड़ी का

जीते भी लकड़ी मरते भी लकड़ी,देख तमाशा लकड़ी का

●●●

नरेन्द्र सिंह
हिन्दी अनुभाग
भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण
नोएडा

हमारा फाइनेंस परिवार

ऑफिस है जैसे एक प्यारा सा घर, यहाँ हर कोई है काम का शेर।
हँसी भी होती, मेहनत भी भारी, यही तो है हमारी असली तैयारी।
मैं सँभालूँ पेंशन और जीपीएफ का हाल, रिटायर लोग कहें – "भाई, आप कमाल!"
फॉर्म में चाहे कितनी भी हो गाँठ, मुस्कुराकर बोलूँ – "सब कर दूँ साफ।"

जय प्रकाश हैं बजट के राजा, केलकुलेटर लेकर घूमें ताजा–ताजा।
कहें – "ये खर्च घटाओ, ये जोड़ लगाओ," लंच ब्रेक में सबको टेबल टेनिस खिलाओ।
भट्ट सँभालें जेएमवीपी की गाड़ी, डेडलाइन आए तो टेंशन भारी।
पर हँसकर कहते – "सब ईजी है यार, प्रोजेक्ट बनेगा – बस दो हमें ईस बार।"

अभिषेक के पास गारंटी का खजाना, रिस्क और ट्रस्ट को है मिलाना।
कहें – "मुहर मेरी लग गई अगर, तो डील पक्की, न होगी डगर।"
वरुण देखें एक्सपेंडिचर की किताब,कहें – "कम करो खर्च, यही है जवाब।"
कॉफी भी गिनें जैसे खर्च का बिल, हँसी से भर दें पूरा हॉल चिल।

आराधना हैं कंकरेंस की रानी, नोट पे लिखती हैं छोटी–सी कहानी।
बिना उनकी हाँ के कुछ आगे न जाए, वो हँसकर कहें – "पहले चाय तो लाएं।"
शंकर हैं मिसमेच पकड़ने वाला, डेबिट –क्रेडिट में डिटेक्टिव मतवाला ।
कहें – "गलती यहाँ है, देखो ध्यान से," सब हँस पड़ें – "ये तो सीबीआई हैं फाइनेंस में।"

तीनों सितारे – दीपक, पुनीत और नंदलाल, हर काम करें जैसे हो खेल धमाल।
कभी फाइल उठाएँ, कभी नोट पहुँचाएँ, हँसते–हँसते टेंशन मिटाएँ।
बॉस आशीष हैं सबके सहारे, गाइडेंस दें जैसे पथप्रदर्शक तारे।
कभी डाँटें, तो उसमें भी प्यार, कहें – "सीखो आगे बढ़ो, करो काम शानदार।"

तो हँसी में काम करो, काम में हँसी लाओ, फाइनेंस परिवार को सब मिलकर सजाओ।
पेंशन हो, बजट हो या बाँड्स की बात, हम सब मिलकर करेंगे हर दिन नई शुरुआत।

•••

भानु कुमार जैन
कनिष्ठ लेखा अधिकारी
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा

प्रतियोगिता की राह

परीक्षा की राह कठिन यही, पर हिम्मत कभी न हार,

सपनों की डोरी थामे चल, बढ़ता जा हर बार।

पन्नों पर लिखी मेहनत जब, मन में उजियारा लाए,

घंटो की तपस्या बनकर, भविष्य का सूरज आए।

पर व्यवस्था की उलझनों में, अक्सर दिल टूट जाता है,

पेपर लीक और टलती तिथि, विश्वास कही खो जाता है।

फिर भी युवा न रुकते है वे सपनों से लड़ते है,

अन्नाय और अव्यवस्था के बीच भी आगे बढ़ते हैं।

सफलता का मोल वहीं समझे, जिसने संघर्ष सहा,

हार–जीत की बाजी में भी, आगे बढ़ना ही कहा।

प्रतियोगिता बस युद्ध नहीं, ये आत्म–विजय की बात,

सपनों को सच करने की, यह होती पहली सौगात।

•••

हर्ष गहलोत
अवर श्रेणी लिपिक
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण
नोएडा

नारी सशक्तिकरण

सशक्तिकरण से तात्पर्य किसी व्यक्ति की उस क्षमता से है जिसमें वो अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके। स्त्री को सृजन की शक्ति माना जाता है अर्थात् स्त्री से ही मानव जाति का अस्तित्व माना गया है। इस सृजन की शक्ति को विकसित परिष्कृत कर उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, न्याय, विचार, विश्वास, धर्म एवं उपासना की स्वतंत्रता, अवसर की समानता का सुअवसर प्रदान करना ही नारी सशक्तिकरण है। महिलाओं को आर्थिक रूप से सम्पन्न एवं आत्मनिर्भर बनाना समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाना ये सभी महिला सशक्तिकरण के प्रकार है। देश के समग्र विकास के लिए महिलाओं का सशक्त होना नितांत आवश्यक एवं अपरिहार्य है। जिसके लिए हमारी केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारे कटिबद्ध है। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण मिशन भी स्थापित किया गया है जिसके द्वारा "बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ", "वन स्टॉप सेंटर", "181 महिला हेल्प लाइन" द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

महिलाओं को सशक्त करने के लिए भारतीय संविधान में निम्नलिखित संवैधानिक प्रावधान किए गए है:–

1. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 के अनुसार भारत राज्य क्षेत्र के किसी भी नागरिक को विधि के समक्ष समता अथवा विधियों के समान संरक्षण से वंचित नहीं किया जाएगा। यहाँ समता से अभिप्राय यह है कि स्त्री एवं पुरुष में किसी प्रकार का लिंग भेद नहीं है तथा यह अधिकार समान रूप से दोनों को प्राप्त होगा।
2. भारतीय संविधान के अनुच्छेद–15 के अनुसार राज्य केवल धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग व जन्म स्थान के आधार पर नागरिकों के मध्य कोई भेदभाव नहीं करेगा।
3. भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19 महिलाओं को स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान करता है।
4. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 23 एवं 24 के अनुसार महिलाओं के विरूद्ध होने वाले शोषण को नारी के मान–सम्मान के विपरीत मानते हुए उनकी खरीद फरोख्त, वैश्या–वृत्ति करना आदि को दंडनीय अपराध की श्रेणी में रखा गया है।
5. भारतीय संविधान का अनुच्छेद 42 महिलाओं को मातृत्व अवकाश प्रदान करता है।
6. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 46 राज्य के दुर्बल वर्गों के लिए शिक्षा तथा अर्थ संबंधी हितों की रक्षा करता है एवं सामाजिक अन्याय एवं सभी प्रकार के शोषण से संरक्षण करेगा।

7. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 क तथा (3) में स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है कि हमारा दायित्व है कि हम हमारी इस प्रकार की प्रथाओं का त्याग करेंगे जो कि महिलाओं के मान–सम्मान के खिलाफ हो।
8. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 243 के (3) के अनुसार प्रत्येक पंचायत में प्रत्यक्ष निर्वाचन से भरे गये स्थानों की कुल संख्या के 1/3 स्थान स्त्रियों के लिए आरक्षित रहेगे तथा चक्रानुक्रम से पंचायत के विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों में आवंटित किए जायेंगे।
9. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 325 के अनुसार निर्वाचक नामावली में महिला एवं पुरूष दोनों को समान रूप से सम्मिलित करने का अधिकार प्रदान किया गया है।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" भारतीय सस्कृति के अनुसार जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है यहाँ देवता निवास करते हैं। महिलाओं को सम्पूर्ण विश्व में सशक्त करने की मंशा से वर्ष 1975 को विश्व महिला वर्ष घोषित किया गया था। भारत में महिलाओं को संवैधानिक तथा कानूनी सुरक्षा प्रदान करने के लिए वर्ष 1992 में राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की गई। महिलाओं को अपने आत्मसम्मान और स्वतंत्रता के लिए स्वयं आगे बढ़ना होगा। महिलाओं के उत्थान के लिए समाज और शासन के स्तर पर और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है।

•••

दीपक चौहान
हिंदी अनुभाग
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएड़ा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा

(सचिवालय : भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा)

ए-13, सेक्टर-1, नोएडा-201301